वर्ष-25 अंक-03 जुलाई – सितंबर 2024

संपर्क सरिता

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल की त्रैमासिक पत्रिका

संपादक-मंडल

निदेशक
प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संपादक
प्रो. पी.के. पुरोहित

सह-संपादक
श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिज़ाइन
श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन
श्री रितेन्द्र पवार

Deemed to be University under Distinct Category

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
(समविश्वविद्यालय, विशिष्ट श्रेणी अंतर्गत)
शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार,
शामला हिल्स,
भोपाल 462002,
(म.प्र.) भारत

सोशल मीडिया लिंक
twitter.com/nitttrbpl
faceboo.com/nitttrbhopalofficial
instagram.com/nitttrbhopal

भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी की 75वीं वर्षगांठ पर

हिंदी दिवस की शुभकामनाएं!

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है। हिंदी दिवस का यह विशेष अवसर हमें अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान और गर्व की भावना को पुनः जागृत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि हमारी पहचान, हमारी परंपराओं और हमारी सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक है। हमारा संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सतत प्रयत्नशील है तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रहा है। तकनीकी संस्थान होने के बाद भी हमारे संस्थान का प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी में कार्य अपने दिल से करता है, यह दर्शाता है की हम हिन्दी में कार्य केवल औपचारिकता निभाने के लिए नहीं अपितु अपनी मातृभाषा के प्रति हमारे समर्पण, लगाव व सम्मान के लिए करते है।

इस महत्वपूर्ण दिन पर, हम सभी को मिलकर हिंदी की विविधता और उसकी समृद्धि को संजोने और उसके विकास का संकल्प लेना चाहिए। हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सहैजने और नए विचारों को अपनाने के लिए हिंदी का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

आइए, हम सभी इस दिन को एक उत्सव की तरह मनाएं और हिंदी को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाकर उसको समृद्ध करें।

आप सभी को हिंदी दिवस की पुनः ढेर सारी शुभकामनाएं!!!

जय हिन्द!!!

प्रो. चन्द्र चारु त्रिपाठी
निदेशक, एन आई टी टी टी आर, भोपाल

हिंदी दिवस समारोह 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन, नई दिल्ली में संस्थान की सहभागिता

संस्थान के निदेशक व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन में सहभागिता की। 14 सितम्बर 2024 राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती के लिए विशिष्ट था। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा की गयी। उन्होंने कहा कि कहा कि, "हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। इस तरह के आयोजनों से हम हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा दे सकते हैं। हिंदी को राजभाषा बनाने से भारत में एकता और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा मिला है।" इस सम्मेलन का

मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रयोग और प्रसार को बढ़ावा देना तथा हिंदी भाषा की समस्याओं का समाधान कर विकास के लिए नए तरीके ढूंढना था। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से राजभाषा हिंदी भाषा में कार्यरत्त अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में विभिन्न सत्र आयोजित किए गए, जिनमें हिंदी भाषा से संबंधित विभिन्न विषयों, हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, प्रयोग में आने वाली चुनौतियां, विकास के लिए नए तरीके, हिंदी भाषा की शिक्षा और प्रशिक्षण आदि पर चर्चा की गई। सम्मेलन में हिंदी को आधुनिक तकनीक और शिक्षा में बेहतर तरीके से समाहित करने के नए रास्ते सुझाए गए। संस्थान की सम्मलेन में सहभागिता ने न केवल हिंदी भाषा की मान्यता को बढ़ाया बल्कि संस्थान के सामाजिक दायित्व और भाषा के प्रति समर्पण को भी उजागर किया। इस अवसर पर निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी के साथ संस्थान के प्रो. पी. के पुरोहित अधिष्ठाता, विज्ञान विभाग व राजभाषा समवयक, श्री जीतेन्द्र चतुर्वेदी व श्रीमती बबली चतुर्वेदी, हिंदी अनुवादक ने भी राजभाषा सम्मलेन में सहभागिता की।

राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती

(75वीं वर्षगांठ) पर विशेष

"भारत में एकता और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देती राजभाषा हिंदी"

भारत की स्वतंत्रता के बाद, राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने के लिए एक लंबी चर्चा हुई। अंततः, संविधान सभा ने **14 सितंबर 1949** को हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया। राजभाषा किसी देश या प्रदेश के विभिन्न राजकाज या सरकारी कार्यों को चलाने के लिए प्रयुक्त विधि द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा होती है। इस वर्ष 14 सितम्बर 2024 को भारत की राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती (75वीं वर्षगांठ) मनाई जा रही है। यह दिन भारतीय भाषाओं की विविधता में हिंदी की भूमिका और महत्व को मान्यता देने का विशेष अवसर है। हिंदी, भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषाओं में से एक है और यह भारत की राजभाषा भी है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई है और यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत भारत की एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। राजभाषा के रूप में "हिंदी" का महत्व भारतीय समाज और संवैधानिक व्यवस्था में बहुत अधिक है। यह अवसर हिंदी भाषा के इतिहास, विकास और वर्तमान स्थिति पर विचार करने का एक उपयुक्त समय है। इस अवसर पर विभिन्न केंद्रीय एवं राजकीय संस्थानों में "हिंदी पखवाड़ा" के अंतर्गत विभिन्न समारोह, कार्यक्रम, और विचार-विमर्श आयोजित किए जाते है, जो हिंदी की समृद्धि और उसके समाज पर प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते है।

हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की एक अहम कड़ी है, जो सांस्कृतिक विविधताओं को भी एक साथ लाती है। हिंदी ने समय के साथ कई अन्य भाषाओं और संस्कृतियों से शब्दों और विचारों को आत्मसात किया है। इसकी इस भाषाई समृद्धि ने इसे एक बहुपरकारी और समावेशी भाषा बना दिया है। हिंदी के विकास की यह यात्रा न केवल भाषा की समृद्धि को दर्शाती है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता और एकता का भी प्रतीक है। हिंदी ने भारतीय साहित्य, शिक्षा और मीडिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी में लिखे गए ग्रंथों, कविताओं, और उपन्यासों ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया है। हिंदी शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और ज्ञान के प्रसार के लिए एक सशक्त माध्यम रही है। हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान भारतीय आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहां विविधता का सम्मिलन होता है और हिंदी उसकी एकता का स्तम्भ है। यह न केवल देश के विभिन्न भागों में संवाद और समन्वय को बढ़ावा देती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की पहचान को मजबूत करती है। हिंदी भाषा अब क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भ से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में पहचान बनाती जा रही है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता प्राप्त है।

14 सितम्बर 2024, राजभाषा के रूप में हिंदी की हीरक जयंती अर्थात 75 वर्षों की यात्रा का सम्मान और उत्सव है। यह दिन हिंदी की समृद्धि, विकास, और इसके योगदान का सम्मान करने का अवसर है। हिंदी, भारत की राजभाषा, न केवल एक भाषा है बल्कि एक ऐसी सांस्कृतिक धरोहर है जो भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को समेटे हुए है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है, तथा हमें हिंदी के भविष्य की दिशा पर भी विचार करना चाहिए और इसे एक प्रगतिशील और समावेशी भाषा के रूप में और अधिक सशक्त बनाने का संकल्प लेना चाहिए।

बबली चतुर्वेदी

संस्थान में विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षणिक प्रोग्राम्स प्रारंभ

सिर्फ डिग्री नहीं,कौशल एवं क्षमता संवर्धन पर फोकस करे स्टूडेंट्स :- प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान ने डीम्ड यूनिवर्सिटी बनने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षणिक प्रोग्राम्स प्रारम्भ किये है। सभी प्रोग्राम्स विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यकता, जॉब ओरिएंटेड एवं क्षमता संवर्धन पर आधारित हैं। संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में कहा कि स्टूडेंट्स को सिर्फ डिग्री नहीं वरन कौशल एवं क्षमता संवर्धन पर फोकस करना चाहिए। शोध सिर्फ पेपर के प्रकाशन तक सीमित न होकर प्रोडक्ट के रूप परिवर्तित हो जो समाज की समस्याओं का हल प्रदान कर सके। संस्थान के स्कूल ऑफ़ साइंसेज, स्कूल ऑफ़ इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज एवं स्कूल ऑफ़ क्रिएटिव एजुकेशन एंड लिबरल आर्ट्स के अंतर्गत विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य अपने-अपने क्षेत्र की नवीनतम एवं उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में पी.एचडी एवं पीजी प्रोग्राम्स का संचालन कर रहे हैं। संस्थान में शोध करने वाले शोधार्थियों को संस्थान के नवीन संसाधन युक्त उत्कृष्टता केंद्र की प्रयोगशाला, उद्योगों की अनुसंधान प्रयोगशालाओं के साथ-साथ संस्थान के (एमओयू) पार्टनर्स की प्रयोगशालाओं में भी कार्य करने की सुविधा मिलेगी। संस्थान में तकनीकी कौशल के साथ ही शिक्षण का अतिरिक्त कौशल भी प्रदान किया जायेगा। संस्थान में अंतरिक्ष मौसम व ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस), लेजर फिजिक्स, ड्रग डिजाइन एवं डिस्कवरी, नैनोमटेरियल, मल्टीफंक्शनल स्मार्ट कंपोजिट, ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी, डेटा साइंस, बिग डेटा एनालिटिक्स, ग्रीन कंप्यूटिंग, इलेक्ट्रिक व्हीकल टेक्नोलॉजी, सेमीकंडक्टर पैकेजिंग, 5जी-6जी संचार, आईओटी, ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग, पाठ्यक्रम डिजाइन एवं विकास, उत्पाद इंजीनियरिंग एवं डिजाइन थिंकिंग, कौशल विकास, सोशल मीडिया प्रबंधन, डिजिटल सामग्री आदि क्षेत्रों में शोध कार्य किया जा रहा हैं।

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में अग्रणी भूमिका निभाता संस्थान

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व पर्यावरण दिवस पर **'एक पेड़ मां के नाम'** अभियान शुरू किया और लोगों से आग्रह किया कि वे इस अभियान का हिस्सा बनें। इसी कड़ी में संस्थान ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए संस्थान परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि "वृक्ष का स्थान मानव जीवन में मां की तरह है। मां की आंचल में जिस तरह बच्चा सुरक्षित रहता है, उसी तरह वृक्ष के आंचल में धरती एवं वातावरण सुरक्षित रहता है। ऐसे अभियान पर्यावरण को खुशहाल और सकारात्मक बनाते हैं। ऐसे में पौधारोपण कर न केवल हम पर्यावरण को बचाएंगे बल्कि वनीकरण में भी अपनी भूमिका निभाएंगे। मां के नाम पेड़ लगाने से अपनी मां का सम्मान तो होगा ही साथ ही धरती मां की भी रक्षा होगी। मैं सभी से इस अभियान से जुड़ने की अपील करता हूँ।

पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सबको सामूहिक प्रयास करना होगा तथा हर एक व्यक्ति को एक पौंधा लगाकर उसकी सुरक्षा के लिए संकल्प लेना होगा। इस अभियान में संस्थान के समस्त कर्मचारियों ने संस्थान परिसर में विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मां द्वारा घर में लगाए पेड़ से जन्में पौधों का माँ की ही स्मृति में रोपण

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को आगे बढ़ाते हुए संस्थान के प्रो. संजय अग्रवाल एवं श्रीमती रचना गुप्ता ने अपनी माता जी स्व. श्रीमती सरोज अग्रवाल द्वारा घर में लगाये गए एक आम के वृक्ष से जन्में 5 पौधों को संस्थान परिसर में रोपित किया। स्व. श्रीमती सरोज अग्रवाल पर्यावरण के प्रति काफी सजग थीं और उन्होंने अपने घर पर विभिन्न पेड़-पौधे लगाए थे। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि आज का कार्यक्रम अपनी माँ के प्रति व्यक्ति की सच्ची श्रद्धांजलि और सम्मान का है। "एक पेड़ माँ के नाम" एक बहुत ही अर्थपूर्ण और संवेदनशील अभियान है। हम सभी नियमित रूप से इन रोपित पौधों के विकास की निगरानी की जिम्मेदारी भी

निभाएं। श्रीमती वंदना त्रिपाठी ने कहा कि परिवार के लिए ये एक भावनात्मक क्षण है जब माँ के हाथों से लगाये गए वृक्ष से तैयार पौधों को माँ की ही याद में परिवार द्वारा लगाये गए है। इस अवसर पर प्रो. संजय अग्रवाल के परिवार सदस्य उपस्थित थे।

संस्थान और उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल के बीच एम.ओ.यू पर हस्ताक्षर

संसाधनों की साझेदारी छात्रों के व्यापक हित में होना चाहिए : प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान ने उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान (आई.ई.एच.ई), भोपाल के साथ मिलकर अनुसंधान, नवाचार और आपसी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू) पर हस्ताक्षर कर एक नया आयाम जोड़ा है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि इस समझौते से दोनों ही संस्थान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे तथा संस्थान अपने उपलब्ध सभी संसाधन आई.ई.एच.ई के

साथ, विद्यार्थियों के हित के लिए साझा करेगा। आई.ई.एच.ई के निदेशक प्रो. प्रग्येश कुमार अग्रवाल ने कहा कि निटर के साथ जुड़कर हमारा संस्थान एक नया अध्याय शुरू कर रहा है। निटर भोपाल ने शिक्षक-प्रशिक्षण एवं ई-कंटेंट डेवलपमेंट के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की है। हम ई-कंटेंट डेवलपमेंट में उनके अत्यधिक नवीन कौशल को अपनाना और सीखना चाहते हैं। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से मूक्स, ई-कंटेंट डेवलपमेंट, शैक्षणिक अनुसंधान, संकाय-विद्यार्थी विनिमय, अल्पावधि कार्यक्रम, क्षमता निर्माण, इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, छात्रों में बहु-कौशल विकास, विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्श में सहायता आदि के क्षेत्र में आपसी सहयोग से कार्य करेंगे। संस्थान ने अपनी भावी ड्रोन टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी व ऑउटसौर्सेड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओसेट) की योजनाओं पर भी आई.ई.एच.ई से विस्तृत चर्चा की गयी। इस अवसर पर आई.ई.एच.ई से डॉ. राम कृष्णा श्रीवास्तव, डॉ. महेंद्र सिंघई व संस्थान से संकाय सदस्य प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. एस. एस. केदार व अन्य संकाय सदस्य उपस्थित थे।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी का संबोधन

ज्ञान-विज्ञान भारतीय परम्पराओं में समाहित है : प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर रिसर्च स्कॉलर्स को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि गुरु पूर्णिमा का पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को जीवित रखने में सहायक है। भारतीय परंपराओं में ज्ञान और विज्ञान का समावेश अद्वितीय और गहन है, यह समावेश एक समग्र और संतुलित जीवन शैली को प्रोत्साहित करता है, जो आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रथाओं के साथ भी सामंजस्य बैठाता है। इस अवसर पर रिसर्च स्कॉलर्स की प्रोग्रेस रिपोर्ट पर विस्तृत चर्चा करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने

कहा कि इनोवेशन के साथ-साथ बिजनेस स्ट्रेटजी भी आवश्यक है। हमारे संस्थान में रिसर्च करने वाले शोधकर्ताओं को

संस्थान के नवीन संसाधन युक्त उच्च तकनीकी एवं उद्योग की अनुसंधान प्रयोगशालाओं में कार्य करने की सुविधा हमेशा उपलब्ध रहती है। शोधार्थियों को नई प्रक्रियाओं व उत्पाद नवाचार से संबंधित शोध कार्य करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि संस्थान के निदेशक रिसर्च स्कॉलर्स व विद्यार्थियों के साथ नवाचार एवं रिसर्च प्रोग्रेस पर निरंतर चर्चा करते रहते है। संस्थान के डीन, स्कूल ऑफ साइंसेज प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि गुरु पूर्णिमा न केवल शैक्षिक संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए भी प्रेरणा स्रोत है। यह दिन हमें एक बेहतर इंसान बनने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर डॉ. दीपक सिंह, डॉ. हुसैन जीवाखान सहित फैकल्टी मेंबर्स, रिसर्च स्कॉलर्स एवं स्टाफ मेंबर्स भी उपस्थित थे।

सेल्फ मोटिवेटेड, सेल्फ ड्रिवन और हैप्पी टीचर्स ही शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन ला सकते हैं: प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान को सम-विश्विद्यालय विशिष्ट श्रेणी का दर्जा मिलने के बाद पीएचडी एवं पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम वर्तमान सत्र से प्रारंभ किये है। इन सभी प्रोग्राम की टीचिंग लर्निंग प्रोसेस, लर्निंग बाय डूइंग, लर्निंग बाय रिसर्च, प्रोजेक्ट एवं प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग पर आधारित होगी। शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि हमारा उद्देश्य है कि संस्थान से निकलने वाला हर विद्यार्थी अपने ज्ञान के आधार पर जाना जाये न की डिग्री के आधार पर। विद्यार्थीयों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना एक अच्छे शिक्षक की निशानी है। आज समाज में सेल्फ मोटिवेटेड, सेल्फड्रिवेन और हैप्पी टीचर्स की आवश्यकता है, जो समाज में एक बड़ा परिवर्तन ला सकें। शिक्षक को अपने कार्य एवं विषय के साथ न्यायपूर्ण रहना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अपार अवसर प्रदान किये हैं। रिसर्च वह हो जो डिग्री तक सीमित न रहकर उपयोगी हो। शिक्षक कागजी कार्यवाही की जगह विद्यार्थीयों की सीखने पर ध्यान केन्द्रित करें। शिक्षा के क्षेत्र में नित नए नवाचार हो रहे हैं। हमें लीक से हटकर सोचना और करना इस अवसर पर डीन प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. आशीष देशपांडे, प्रो. पी.के पुरोहित सहित संकाय सदस्य एवं अधिकारी उपस्थित थे।

संस्थान द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा पर ऑनलाइन कोर्स प्रारम्भ

संस्थान द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा पर ऑनलाइन कोर्स प्रारंभ किया गया है जोकि मैसिव ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम (मूक्स), स्वयं पोर्टल पर उपलब्ध है। संस्थान द्वारा सेल्फ लर्निंग मोड में कई कोर्सेस का निर्माण किया गया है जो स्वयं पोर्टल पर काफी लोकप्रिय एवं शिक्षको के लिए उपयोगी रहे हैं। संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने बताया कि धर्म, दर्शन, विज्ञान, वास्तु, ज्योतिष, खगोल, स्थापत्य कला, नृत्य कला, संगीत कला, आदि सभी तरह के ज्ञान का जन्म भारत में हुआ है ऐसा कहने में कोई गुरेज नहीं, क्योंकि इसके हजारों प्रमाण मौजूद हैं| भारत को हमेशा से ही वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र की मान्यता प्राप्त रही है, जिसमें ज्ञान

प्रणालियों और बौद्धिक उपलब्धियों का एक लंबा इतिहास है। कला, विज्ञान, गणित और ऐसे अनगिनित क्षेत्र हैं जिनमे भारतीय योगदान अनुपम है| इस तरह के प्रोग्राम से आज की युवा पीढ़ी एवं शिक्षक भी हमारी समृद्ध भारतीय वैज्ञानिक परम्परा को पहचान कर उस पर गर्व कर सकेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के सभी स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये। इस कोर्स की समन्वयक डॉ. रोली प्रधान एवं सह-समन्वयक प्रो. आर.के दीक्षित थे। संस्थान द्वारा अभी तक

लगभग 18 मूक्स कोर्सेस का निर्माण किया गया है जिसके माध्यम से लगभग 2 लाख शिक्षको ने लाभ प्राप्त किया है।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा संस्थान में तकनीकी सत्र आयोजित

संस्थान ने भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस) के साथ सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कर अपनी प्रतिबद्धता को औपचारिक रूप दिया। इस साझेदारी का उद्देश्य पारस्परिक लाभ और सहयोग की नींव पर मानकीकरण और अनुरूपता मूल्यांकन प्रथाओं को आगे बढ़ाना है। संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी के नेतृत्व में इस दिशा मे मुख्य रूप से स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में मानकीकरण को एकीकृत करना, बीआईएस विशेषज्ञों के नेतृत्व में प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी सत्र आयोजित करना शामिल है। संस्थान ने जून 2024 में बीआईएस विशेषज्ञों द्वारा आयोजित किए जाने वाले 16 तकनीकी सत्रों को शामिल करते हुए एक विस्तृत कार्य

योजना बीआईएस को दी थी। इन श्रृंखलाओं में पहला तकनीकी सत्र 31 जुलाई, 2024 को आयोजित किया गया जिसमें मानकीकरण के मूल सिद्धांतों, मानक निर्माण प्रक्रिया, संबंधित चुनौतियों और वैश्विक मानकों के परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित किया गया था। श्रीमती शिखा राणा, संयुक्त निदेशक, बीआईएस, नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान में बीआईएस गतिविधियों, मानकों के विकास, वर्गीकरण और जीवनचक्र में गहन

अंतर्दृष्टि प्रदान की। उन्होंने प्रतिभागियों को बीआईएस की मोबाइल एप्लिकेशन "केयर ऐप" का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो लाइसेंस सत्यापन, एचयूआईडी (सोने के गहने प्रामाणिकता जांच), अनिवार्य प्रमाणन स्थिति, सरलीकृत उत्पाद प्रमाणन, प्रयोगशाला जानकारी और व्यापक भारतीय मानक डेटा सहित कई सुविधाओं की पेशकश करता है। संस्थान के प्रोफेसर डॉ. आर. के. दीक्षित ने 2047 तक आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने में इस सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। संस्थान की बीआईएस नोडल अधिकारी प्रो. चंचल मेहरा ने इन प्रयासों में शिक्षकों और विद्यार्थियों से जुड़ाव के महत्व को रेखांकित किया।

संस्थान ने जनरल एयरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड बेंगलुरू के साथ किया एमओयू

संस्थान ने जनरल एयरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड बेंगलुरू के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किये। जनरल एयरोनॉटिक्स विभिन्न क्षेत्रों के लिए ड्रोन टेक्नोलॉजी प्रदान करती है साथ ही कृषि ड्रोन का वाणिज्यिक उत्पादन करती है। इस अवसर पर संस्थान निदेशक प्रो सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि आज प्रौद्योगिकी दुनिया को बहुत तेजी से बदल रही है। आज ड्रोन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अपार सम्भावनाये हैं। इस क्षेत्र में स्किल्ड मैनपावर की जरुरत है। इस क्षेत्र में युवाओं के लिए लाखों नए रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं, यह संख्या आगे और बढ़ेगी। संस्थान ड्रोन टेक्नोलॉजी उसके अनुप्रयोग, संचालन एवं मेंटेनेस के विषय में जागरूकता बढ़ाना तथा इस क्षेत्र में टैलेंट पूल तैयार करने हेतु जनरल एयरोनॉटिक्स के साथ मिलकर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करेगा। जनरल एयरोनॉटिक्स के सी.ई.ओ श्री

अभिषेक बर्मन ने कहा कि इस समझौते से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भारत को ड्रोन हब बनाने के लक्ष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य होगा। इस एमओयू के माध्यम से विद्यार्थी एवं संकाय को प्रशिक्षण, शोध, ऑनलाइन कोर्सेस आदि का लाभ मिलेगा। इस अवसर पर जनरल एयरोनॉटिक्स के श्री कन्नन एम एवं संस्थान सेन प्रो. सुब्रत रॉय, प्रो. पी.के पुरोहित व प्रो. रमेश गुप्ता उपस्थित थे।

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस पर कार्यक्रम

विकसित भारत बनाने हेतु हम सभी संकल्प एवं समर्पण के साथ कार्य करें : प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण के साथ निदेशक डॉ. सी.सी त्रिपाठी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधन में कहा कि "आइए हम मिलकर ऐसा भारत बनाएँ जो न केवल हमारे पूर्वजों के सपनों का सम्मान करता है, बल्कि विश्व के लिए एक मिसाल भी कायम करता है। यह स्वतंत्रता दिवस ओर भी विशेष इसलिए है कि अब

हमारा देश एक नया सपना देख रहा है – "विकसित भारत" बनने का। यह सपना केवल सरकारी योजनाओं का नहीं है, बल्कि यह हर भारतीय के दिल की धड़कन है। विकसित भारत का मतलब है एक ऐसे भारत का निर्माण जहाँ हर नागरिक को अपनी क्षमता के अनुसार अवसर मिले, जहाँ बुनियादी सुविधाओं की कोई कमी न हो, और जहाँ हर क्षेत्र में प्रगति हो। यह हमारा कर्तव्य है कि हम एक अधिक एकजुट और प्रगतिशील राष्ट्र की दिशा में काम करें, और समाज के विकास और कल्याण में अपना योगदान दें।" इस अवसर पर वॉलीबॉल एवं बास्केटबॉल ग्राउंड का उदघाटन भी किया गया। संस्थान परिवार के बच्चो ने देशभक्ति गीतों एवं नृत्य की प्रस्तुति दी तथा इस अवसर पर श्रीमती वंदना त्रिपाठी भी उपस्थित थी।

सिर्फ राष्ट्र दिवसों पर ही नहीं वरन वर्षभर देशभक्ति की भावना रहनी चाहिए :- प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान वर्ष भर तिरंगे के रंगों में रंगा संस्थान है, यह संस्थान की एक अद्वितीय और गर्वित पहल है जो देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देती है। यह पहल देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विरासत के प्रति हर भारतीय को गर्व व सम्मान से भर देती है। यह केवल संस्थान की प्रतिष्ठा को ही नहीं बढ़ाती है बल्कि संस्थान के कर्मचारियों में देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देती है। तिरंगा, जिसमें केसरिया, सफेद, और हरे रंग के साथ अशोक चक्र होता है, हमारी आजादी, हमारे बलिदानों और हमारी एकता का प्रतीक है। केसरिया रंग त्याग और साहस का प्रतीक है, सफेद रंग शांति और सच्चाई का, और हरा रंग प्रगति और समृद्धि का। अशोक चक्र, जो हमारे संविधान के धर्मचक्र से लिया गया है, यह निरंतरता और परिवर्तन का प्रतीक है। जब कोई संस्थान तिरंगे रंग में रंगा जाता है, तो यह न केवल उस संस्थान की देशभक्ति को दर्शाता है, बल्कि यह भी संदेश देता है कि देश की अखंडता और एकता के प्रति हम सभी प्रतिबद्ध हैं। यह रंग संयोजन हमें याद दिलाता है कि हम एक समृद्ध, विविध और गौरवशाली इतिहास वाले राष्ट्र का हिस्सा हैं। यह

कर्मठता और समर्पण का प्रतीक है कि संस्थान न केवल अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों को निभा रहा है, बल्कि राष्ट्रीय भावनाओं और मूल्यों को भी जीवित रख रहा है। तिरंगे रंग में रंगे संस्थान एक

प्रकार से राष्ट्रीय गौरव और सामूहिक पहचान को पुनःस्थापित करने का प्रयास करते हैं। यह पहल हर किसी को यह याद दिलाती है कि हम सब एक साथ मिलकर एक महान राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं और हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी देश की समृद्धि और विकास में योगदान देते हैं। ऐसे प्रयास हमारे देश के प्रति हमारी ईमानदारी और संस्थान की कर्मठता का प्रमाण हैं।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान का निटर भ्रमण

दिव्यांगजनों के कौशल विकास एवं सशक्तीकरण मानवता की सच्ची सेवा है:- प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान (एन.आई.एम.एच.आर), सीहोर एवं सी.आर.सी भोपाल की टीम ने संस्थान का भ्रमण किया। इस टीम ने संस्थान के साथ मिलकर संयुक्त कार्यक्रमों पर चर्चा की। इन संस्थान एवं केंद्रों पर मानसिक रूप से अशक्त लोगों का सशक्तीकरण एवं सभी श्रेणियों के दिव्यांग व्यक्तियों के लिए व्यापक दिव्यांग पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने का कार्य किया जाता है। संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि मानसिक स्वास्थ्य हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। समाज के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते दिव्यांगजनों के कौशल विकास, पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण के लिए किया गया हर कार्य मानवता की सच्ची सेवा है। हम इस सेवा में भागीदार बनने इस दिशा

में हर संभव सहयोग के लिए तैयार है। इस अवसर पर संस्थान से प्रो. अजय जैन, प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. आशीष देशपांडे तथा सी.आर.सी भोपाल से डॉ. नरेंद्र कुमार, एन.आई.एम.एच.आर सीहोर से डॉ. अंकित चौधरी उपस्थित थे।

संस्थान छत्तीसगढ़ में ड्रोन एवं सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में करेगा कार्य

निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने की छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से मुलाकात

संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से मुलाकात कर संस्थान के विस्तार केंद्र रायपुर में इमर्जिंग एवं फ्यूचर टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में अनुसंधान, नवाचार और कौशल पार्क की स्थापना पर विस्तृत चर्चा की। संस्थान ने विस्तार केंद्र रायपुर में ड्रोन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अल्पकालिक पाठ्यक्रम, प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव दिया जो कि क्रेडिट बेस्ड रहेंगे, तथा जिसकी मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने रूचि लेते हुए संस्थान की प्रशंसा की। संस्थान का विस्तार केंद्र उद्योग की मांगों और नियामक मानकों को पूरा करते हुए कुशल ड्रोन पायलटों

और तकनीशियनों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करेगा। यह प्रस्ताव भारत सरकार की ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने और 2030 तक भारत को ड्रोन के लिए प्रमुख वैश्विक केंद्र बनाने की पहल के अनुरूप है। संस्थान ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), व भिलाई प्रौद्योगिकी संस्थान (बीआईटी), रायपुर के साथ सेमी-कंडक्टर तथा ड्रोन तकनीक में अनुसंधान, नवाचार और कौशल केंद्र के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित किये। इस अवसर पर बीआईटी रायपुर के प्रिंसिपल डॉ.श्री राम कृष्णा मिश्रा, एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ.एन.वी रमण राव, संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी, संकाय सदस्य प्रो. पराग दुबे व प्रो. सुब्रत रॉय उपस्थित थे।

साइंस सोसाइटी एंड कल्चर पर व्याख्यान

विज्ञान, समाज और संस्कृति के समग्र दृष्टिकोण से हम विकसित भारत बनेंगे- डॉ. रंजना अग्रवाल

संस्थान में "साइंस सोसाइटी एंड कल्चर: अ होलिस्टिक एप्रोच फॉर विकसित भारत" विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. रंजना अग्रवाल, निदेशक सीएसआईआर-निस्पर थी। डॉ. रंजना अग्रवाल ने अपने व्याख्यान में कहा कि अनादि काल से भारत में विज्ञान की परम्परा विद्यमान रही है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से मिले साक्ष्य इस बात का प्रमाण हैं कि उन लोगों में विज्ञान की समझ थी। प्राचीन काल में भारत में विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में महर्षि सुश्रुत के द्वारा खोजी

गई शल्य चिकित्सा है, दुनिया आज उन्हें 'फादर ऑफ सर्जरी' मानती है तथा नागार्जुन ने रसायन विज्ञान को जन्म दिया। मनुष्य और विज्ञान का विकास एक साथ होता है। विकसित भारत की कल्पना के लिए विज्ञान, समाज और संस्कृति के प्रति समग्र दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। विज्ञान हमारे समाज एवं संस्कृति का हिस्सा है। मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से कठिन से कठिन कार्य को सरल बना लिया है। आज देश की तरक्की के पैमाने का निर्धारण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है। जो देश विज्ञान के क्षेत्र में जितना उन्नति करेगा उसकी अर्थव्यवस्था उतनी ही मजबूत होगी। विज्ञान को पृथक कर किसी समाज या राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कार्यक्रम के अंत में संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने डॉ. रंजना अग्रवाल के महत्वपूर्ण विषय पर विशेष व्याख्यान देने के लिए उनका अभिनंदन किया। उक्त व्याख्यान में प्रो. दिनेश अग्रवाल, कुलपति गुरुग्राम विश्वविद्यालय, एवं डॉ एस.एस पांडा, पूर्व निदेशक निटर चेन्नई एवं संस्थान के संकायगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

संस्थान में सृष्टि के शिल्पकार की जयंती पर कार्यक्रम

संस्थान में सृष्टि के शिल्पकार की जयंती विश्वकर्मा पूजा के रूप में मनाई गयी। भगवान विश्वकर्मा को विश्व के निर्माता और सभी कलाओं के स्वामी के रूप में जाना जाता है। भारतीय मान्यताओं में भगवान विश्वकर्मा को सृजन का देवता माना गया है। भगवान विश्वकर्मा ही

दुनिया के पहले शिल्पकार, वास्तुकार और इंजीनियर थे। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विश्वकर्मा ने महलों, हथियारों और सिंहासनों का निर्माण किया था। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी, श्रीमती वंदना त्रिपाठी, प्रो. आर.के दीक्षित, प्रो. सुब्रत रॉय सहित संस्थान के संकायगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

आईक्रिएट अहमदाबाद का संस्थान भ्रमण

कम लागत एवं स्वदेशी तकनीक से आत्मनिर्भर बनता भारत : प्रो. सी.सी त्रिपाठी

अंतर्राष्ट्रीय उद्यमिता एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (आईक्रिएट) अहमदाबाद के अधिकारियों श्री अविनाश पुणेकर, सीईओ एवं श्री आशीष कनोजिया, प्रौद्योगिकी सलाहकार, ने संस्थान का भ्रमण कर संस्थान निदेशक व संकाय सदस्यों के साथ भेंट की। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण से निर्देशित, आईक्रिएट तकनीकी नवाचार पर आधारित स्टार्टअप को सफल व्यवसायों में बदलने के लिए समर्पित संस्थान है। इस भ्रमण के दौरान कौशल एवं उद्यमिता केंद्र की स्थापना, उद्यम निर्माण या इनक्यूबेशन प्रबंधन तथा भविष्य में संयुक्त कार्यक्रम

किए जाने पर चर्चा की गई। संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि स्टार्टअप के प्रति धारणा बदलने की जरूरत है। स्टार्टअप्स को अक्सर जोखिम भरा और अस्थिर माना जाता है, लेकिन यह स्टार्टअप्स ही नवाचार, रोजगार और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। कम लागत की स्वदेशी तकनीकों से स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत अभियान, इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन और निर्माण के लिए भारत को वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करते हुए, सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले निर्माण में व्यापक रूप से कार्य किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत संस्थान में आउटसोर्स्ड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओसेट) के लिए स्किलिंग सेंटर प्रारम्भ किया जा रहा है। इस सेंटर में सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री से रिलेटेड हर तरह की ट्रेनिंग प्रदान की जाएगी। इस अवसर

पर संस्थान के डीन, प्रो. आर.के दीक्षित, प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. पल्लवी भटनागर, डॉ. पी.के. खन्ना, प्रो. सीमा वर्मा उपस्थित थे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न

राजभाषा हिंदी जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक है : प्रो. आर के दीक्षित

संस्थान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) क्र01 की वर्ष 2024 की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों ने भाग लिया। इस बैठक में विगत छःमाह में की गई राजभाषा गतिविधियों पर चर्चा हुई एवं राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये। संस्थान के निदेशक एवं नराकास के अध्यक्ष प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस बैठक हेतु भेजे अपने सन्देश में कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है। इस वर्ष हम सब 14 सितम्बर 2024 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किये हुए 75 वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयंती मना रहे है। संस्थान के प्रभारी निदेशक प्रो. आर के दीक्षित ने कहा कि राजभाषा हिंदी जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक है। संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सतत प्रयत्नशील है तथा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रहा है। संस्थान के डीन व राजभाषा समन्वयक प्रो पी.के पुरोहित ने कहा कि हिंदी एक स्वतंत्र और सक्षम भाषा है और आज आवश्यकता इस बात

की है कि हिंदी को अधिक से अधिक प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाए। संस्थान वर्ष भर हिंदी कार्यशालाएं /प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है तथा सदस्य कार्यालयों की अधिक से अधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करता है। बैठक में कर्नल आशीष अग्रवाल, श्री प्रशांत पाठरावे, श्री आशीष पोटनीस, प्रो. सविता दीक्षित, श्री भारत भूषण देशमुख, सहित भोपाल के लगभग 52 नराकास के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन नराकास सचिव श्री संजय त्रिपाठी व श्रीमती शोभा लेखवानी ने किया।

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

संस्थान में हिंदी पखवाड़े का आयोजन व्यापक रूप से किया गया, जिसका औपचारिक शुभारम्भ माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा 14 सितम्बर को भारत मंडपम नई दिल्ली में किया गया था। उसी कड़ी में संस्थान में हिंदी पखवाड़ा 30 सितम्बर तक मनाया गया जिसके अंतर्गत हिंदी को सीखने और बोलने के प्रति लोगों में जागरूकता फ़ैलाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यशाला, प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में कहा कि हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, पहचान और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। हम सब मिलकर हिंदी को अपनी संस्कृति और ज्ञान का प्रतीक बनाएं और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें। हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ पर "विज्ञान के अनुप्रयोग" पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

किया गया, जिसके समन्वयक डॉ.पी.के पुरोहित थे। उन्होंने कहा, "हिंदी में विज्ञान की शिक्षा केवल भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच को विकसित करने के लिए भी आवश्यक है।" इस कार्यशाला का उद्देश्य विज्ञान अध्यन-अध्यापन को हिंदी भाषा में बढ़ावा देना था। हिंदी पखवाड़ा की संयोजिका प्रो. वंदना सोमकुंवर तथा समन्वयक श्री संजय त्रिपाठी थे। इसके उपरांत संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी, जिनका परिणाम निम्नानुसार है:

क्र	प्रतियोगिता का नाम	निर्णायक	तिथि	प्रतिभागी श्रेणी
1.	निबंध प्रतियोगिता	डॉ इज़हार अहमद	26.09.2024	प्रथम – श्रीमती नीतू अग्रवाल द्वितीय – सुनील सक्सेना तृतीय – श्रीमती दिव्या विजय एवं श्री निलेश पुनकर प्रोत्साहन – भावना मोतियानी
2.	पुस्तक/चलचित्र/कहानी - समीक्षा प्रतियोगिता	डॉ. बशीर/ श्री निलेश पुनकर	25.9.2024	प्रथम – श्रीमती शोभा लेखवानी द्वितीय – श्रीमती बबली चतुर्वेदी तृतीय – श्रीमती रचना गुप्ता प्रोत्साहन – श्री कुनाल वासनिक एवं श्री प्रमोद शर्मा
3.	श्रुत–लेखन प्रतियोगिता	श्री संजय त्रिपाठी	24.09.2024	प्रथम – श्री पंकज प्रजापति द्वितीय – श्री सय्यद अख्तर तृतीय - श्री रावेन्द्र शुक्ला प्रोत्साहन – श्री गौरव बघेल एवं श्री गौरव कुमार
4.	स्वरचित आशु-कविता प्रतियोगिता	डॉ संगीता गुंदेचा श्रीमती वंदना त्रिपाठी	23.09.2024	प्रथम- श्री शिवम् खरे द्वितीय - श्रीमती अनीता लाला तृतीय- श्री चंद्रभूषण सक्सेना प्रोत्साहन - श्री रीतेंद्र पवार एवं श्री कमल सिंह यादव

5.	तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता	श्री अशोक शर्मा जी	20.09.2024	प्रथम - श्रीमती गुंजन शर्मा द्वितीय- श्री संजय त्रिपाठी तृतीय- श्रीमती शोभा लेखवानी प्रोत्साहन - डॉ हरेन्द्र एवं श्री प्रवीन चडोकार
6.	हास्य कविता	डॉ संगीता गुंदेचा श्रीमती वंदना त्रिपाठी	19.9.2024	प्रथम- श्री संजय त्रिपाठी द्वितीय – श्रीमती बबली चतुर्वेदी तृतीय- श्रीमती अनीता लाला प्रोत्साहन – गजेन्द्र बोहरे

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का समापन

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है : प्रो. सी.सी त्रिपाठी

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर, निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। समापन समारोह की मुख्य अतिथि हिंदी लेखिका श्रीमती वंदना त्रिपाठी थी तथा उन्होंने कविता पाठ कर अपना संबोधन दिया। संस्थान के अधिष्ठाता प्रशासन प्रो. आर.के दीक्षित ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में युवाओं की भूमिका पर जोर दिया और कहा कि, "हमें अपनी भाषा को गर्व के साथ अपनाना चाहिए और इसे समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए।" समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कविता पाठ, निबंध लेखन, प्रश्न मंच और भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग को चलशील्ड प्रदान की गई जिसे डीन प्रो. पी.के पुरोहित एवं अन्य संकाय सदस्य व कर्मचारियों ने ग्रहण किया। सभी प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिससे समारोह में एक उत्साहपूर्ण माहौल बना। अंत में, सभी उपस्थित लोगों ने एकजुट होकर हिंदी भाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की और अगले वर्ष फिर से इस तरह के आयोजन के लिए उत्साहपूर्वक तत्पर रहने का संकल्प लिया।

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम

डिजिटल नवाचार एवं आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 01 से 05 जुलाई 2024 तक प्रधानमंत्री गतिशक्ति योजना के अंतर्गत "डिजिटल नवाचार एवं आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन" विषय पर ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 15 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को सप्लाई चेन, लॉजेस्टिक ईआरपी एवं डिजिटल इनोवेशन जैसे की आईओटी, ब्लाक चेन, रोबोटिक, मशीन लर्निंग, सप्लाई चेन प्रबंधन पर विस्तृत जानकारी दी गई। पीएम गति शक्ति योजना भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसका उद्देश्य देश के बुनियादी ढांचे में क्रांति लाना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. संजय अग्रवाल ने योगदान दिया।

आईपीआर एंड पेटेंटिंग पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में दिनांक 23 से 27 सितम्बर 2024 तक "आईपीआर एंड पेटेंटिंग पर कार्यक्रम" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रशिणार्थियों को आईपीआर एवं उसके विभिन्न प्रकार जैसे की पेटेंट, कॉपीराईट, इंडस्ट्रियल डिजाइन, ट्रेडमार्क, ट्रेड सीक्रेट्स, भौगोलिक सूचकांक एवं इन सभी के पंजीयन प्रक्रिया पर विस्तृत जानकारी दी गयी तथा केस स्टडीज़ के माध्यम से अनुभव साझा किये गये। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों का समाधान किया गया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पी. के पुरोहित व सह-समन्वयक डॉ. सी.एस राजेश्वरी थी।

कैरेक्टराइजेशन ऑफ नैनो मटेरियल पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 29 जुलाई से 02 अगस्त 2024 तक "कैरेक्टराइजेशन ऑफ नैनो मटेरियल" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 24 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि चिकित्सा क्षेत्र, कृषि क्षेत्र, ऑटोमोबाइल क्षेत्र, कंप्यूटर और मोबाइल क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सौंदर्य प्रसाधन क्षेत्र, रक्षा क्षेत्र आदि में नैनो प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे तथा नैनो मटेरियल के कैरेक्टराइजेशन की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान व सह-समन्वयक डॉ. बशीरउल्ला शेख थे तथा एम्प्री व आइसर के विषय विशेषज्ञों ने अपना योगदान दिया।

आउटकम बेस्ड एजुकेशन पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में "आउटकम बेस्ड एजुकेशन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 55 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों यह कार्यक्रम शिक्षकों में ऐसी योग्यताएँ विकसित करने पर केंद्रित था जो उन्हें परिवर्तनकारी परिणाम-आधारित शिक्षण-शिक्षण वातावरण में बहुआयामी भूमिकाएँ निभाने में सक्षम बनाएगी। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम के परिणाम व पाठ्यक्रम मूल्यांकन योजना तैयार करना, एक अच्छा प्रश्न पत्र डिज़ाइन करना, प्रयोगशाला कार्य के मूल्यांकन के लिए रूब्रिक तैयार करना आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरउल्ला शेख व सह-समन्वयक डॉ. आर.के दीक्षित थे।

तकनीकी शिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए आईसीटी के उपयोग पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान के पुणे विस्तार केंद्र में "तकनीकी शिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए आईसीटी का उपयोग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 59 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तकनीकी शिक्षकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के उपयोग के माध्यम से उनकी शिक्षण क्षमताओं को बढ़ाना था। इसमें शिक्षकों को नवीनतम तकनीकी उपकरणों और संसाधनों का सही उपयोग सिखाया गया जिससे वे अपने पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बना सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरउल्ला शेख व सह-समन्वयक डॉ. वी.डी. पाटिल थे।

परिणाम आधारित पाठ्यक्रम के लिए प्रश्न पत्र डिजाइन पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान के पुणे विस्तार केंद्र में दिनांक 22 से 26 जुलाई 2024 तक "परिणाम आधारित पाठ्यक्रम के लिए प्रश्न पत्र डिजाइन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 32 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में पाठ्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मूल्यांकन से संबंधित मुद्दों को समझने के लिए विभिन्न चुनौतियों और सुधारों पर चर्चा की गयी, जिनमें छात्रों के मूल्यांकन के उद्देश्यों की व्याख्या, अच्छी मूल्यांकन प्रणाली की विशेषताओं की व्याख्या, उच्च गुणवत्ता वाले निबंध, लघु उत्तर, बहुविकल्पीय और संरचित प्रश्न तैयार करना, अच्छे प्रश्नपत्र की डिजाइन, मौखिक प्रश्न तैयार करना, एनईपी 2020 के संदर्भ में मूल्यांकन सुधार, प्रश्नपत्रों की विश्वसनीयता और वैधता को प्रभावित करने वाले कारकों आदि की विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरउल्ला शेख व सह-समन्वयक डॉ. वी.डी. पाटिल थे।

ई-कॉमर्स एवं आपूर्ति श्रृंखला पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 02 से 06 सितम्बर 2024 तक "ई-कॉमर्स एवं आपूर्ति श्रृंखला" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 23 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को पीएम गति शक्ति पहल के महत्व, ई-बिजनेस और ई-कॉमर्स मॉडल, ई-कॉमर्स आपूर्ति श्रृंखला के लिए उपकरणों और तकनीकों का उपयोग, आपूर्ति श्रृंखला मापदंडों और ग्राहक संतुष्टि के बीच संबंध, ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग तथा जोखिम प्रबंधन और सुरक्षा, ई-कॉमर्स आपूर्ति श्रृंखला का परिचय, मुख्य घटक और महत्व, लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउस प्रबंधन और स्वचालन तकनीकें आदि की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बशीरउल्ला शेख व सह-समन्वयक डॉ. आर.के. कपूर थे।

इंडक्शन प्रोग्राम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 02 से 13 सितम्बर 2024 तक "इंडक्शन प्रोग्राम" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 38 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को एनईपी 2020 और तकनीकी शिक्षा प्रणाली पर इसके प्रभावों की व्याख्या, तकनीकी शिक्षकों की नई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों, शिक्षण-अधिगम

प्रक्रिया के सिद्धांतों को लागू करना, पाठ्यक्रम विश्लेषण के बाद सीखने के परिणामों की व्याख्या आदि पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. दीपक सिंह व सह-समन्वयक डॉ. ए.के. जैन थे।

प्राचीन भारतीय गणित पर कार्यक्रम

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 23 से 28 सितम्बर 2024 तक "प्राचीन हिन्दी गणित" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 21 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को गणित और बहुविध अनुसंधान, विभिन्न क्षेत्रों में गणित का उपयोग, भारतीय गणित की तकनीकों का उपयोग करके व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में, वैदिक गणित के सिद्धांत व उपयोग, वैदिक गणित और भारतीय गणित के दृष्टिकोण, भारतीय गणितज्ञों और उनके योगदान का अध्ययन, संख्या प्रणाली, संख्या सिद्धांत आदि पर विस्तृत

जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. दीपक सिंह

व विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. कैलाश विश्वकर्मा, राष्ट्रीय संरक्षक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (एसएसयूएन), नई दिल्ली, श्री राकेश भाटिया, वैदिक गणित के राष्ट्रीय सह-समन्वयक एस.एस.यू.एन, डॉ. अनुपम जैन, निदेशक, प्राचीन भारतीय गणित केंद्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर तथा डॉ.सुधीर कुमार श्रीवास्तव, प्राध्यापक, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने अपना योगदान दिया।

प्रशिक्षुता पर अभिमुखीकरण कार्यक्रम

स्कोप ग्लोबल स्किल यूनिवर्सिटी, भोपाल ने उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया। अभिमुखीकरण कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने किया। उन्होंने प्रशिक्षुता के वैश्विक परिदृश्य को रेखांकित किया और उद्योग और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए प्रशिक्षुता के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह सभी के लिए जीत की स्थिति है। स्वागत भाषण में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजय भूषण ने विश्वविद्यालय के कौशल विकास प्रयासों की जानकारी दी।

सहायक निदेशक डॉ. वी.वी. देशमुख ने प्रशिक्षुता की पूरी प्रक्रिया की

जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षुता के महत्व, एनएटी 2.0 की ऑनलाइन सुविधाओं और प्रतिष्ठानों और प्रशिक्षुओं के लिए लॉगिन और नामांकन प्रक्रिया पर जोर दिया। प्रो. बी.एल. गुप्ता एनआईटीटीटीआर, भोपाल ने एनईपी 2020 के प्रावधानों, राष्ट्रीय क्रेडिट ढांचे, प्रशिक्षुता के लिए डिजिटल पाठ्यक्रम, लर्निंग पोर्टफोलियो, और मूल्यांकन योजना के बारे में जानकारी दी। प्रतिनिधियों को एनआईटीटीटीआर, भोपाल के ई-प्रशिक्षण के बारे में समझाया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिनिधियों के लिए एक प्रश्न उत्तर सत्र का आयोजन किया गया जिसका संचालन श्री वी.वी. देशमुख ने किया।

कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग

कार्यालय प्रबंधन एवं डिजिटलीकरण पर कार्यक्रम

कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 02 से 06 सितम्बर 2024 तक विषय "कार्यालय प्रबंधन एवं डिजिटलीकरण" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 09 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को विंडोज प्लेटफ़ॉर्म पर फ़ाइलें, फ़ोल्डर्स और ऐप्स का प्रबंधन, वर्ड प्रोसेसिंग टूल का उपयोग करके व्यावसायिक दस्तावेज़ तैयार करना, डेटा का विश्लेषण करना और स्प्रेडशीट का उपयोग करके इसे ग्राफ़िक रूप से प्रस्तुत करना,

स्लाइड शो प्रस्तुतियाँ तैयार करना, कार्यालय से संबंधित गतिविधियों के लिए इंटरनेट का प्रभावी ढंग से उपयोग करना व विभिन्न ई-लर्निंग टूल का उपयोग करना सिखाया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक श्री परिवेश कस्तूरिया तथा श्री प्रकाश एन हरदहा सह-समन्वयक थे।

गहन अध्ययन पर कार्यक्रम

कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 09 से 13 सितम्बर 2024 तक विषय "गहन अध्ययन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में बिहार, मध्य प्रदेश और हैदराबाद राज्यों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मशीन लर्निंग (एमएल) का अवलोकन, पर्यवेक्षित शिक्षण, अपर्यवेक्षित

शिक्षण, अर्ध-पर्यवेक्षित शिक्षण, सुदृढीकरण शिक्षण, न्यूरल नेटवर्क का अवलोकन, डीप लर्निंग (डीएल) एल्गोरिदम, डीप लर्निंग आर्किटेक्चर, खोजपूर्ण डेटा विश्लेषण, क्लस्टरिंग और वर्गीकरण जैसे

विषयों को शामिल किया गया। प्रशिक्षणर्थीयों को खोजपूर्ण डेटा विश्लेषण, पर्यवेक्षित और अपर्यवेक्षित एल्गोरिदम का उपयोग करके समस्याएं और समाधान, आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क (एएनएन) और मल्टीलेयर परसेप्ट्रॉन (एमएलपी) सहित न्यूरल नेटवर्क, डीप लर्निंग एल्गोरिदम पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिभागियों को मानक डेटा डेटासेट के बारे में बताया गया, इनपुट डेटासेट को प्रीप्रोसेस करने का अभ्यास कराया गया तथा प्रतिभागियों ने आईओटी लैब, रोबोटिक्स लैब, मेक्ट्रोनिक्स लैब का दौरा किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ.एस.गणपति तथा सह-समन्वयक डॉ. रूपेश कुमार देवांग थे।

मीडिया अनुसंधान एवं विकास शिक्षा विभाग

मानकीकरण पर व्याख्यान

मीडिया अनुसंधान एवं विकास शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में दिनांक 11 सितम्बर 2024 को बीआईएस, नई दिल्ली के समन्वय में "मानकीकरण- मूल अवधारणाएं, मानक निर्माण प्रक्रिया और मानकों की दुनिया" विषय पर बीआईएस की संयुक्त निदेशक सुश्री शिखा

राणा द्वारा एक विशेष व्याख्यान सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र के दौरान प्रतिभागियों को 1947 से भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) की यात्रा, बीआईएस की मुख्य गतिविधियों, मानकों के महत्व, मानकों के विभिन्न स्तरों, मानकों के

प्रकार, मानक इको-सिस्टम, अच्छे मानकीकरण के सिद्धांतों, मानकों के जीवन चक्र, मानक निर्माण प्रक्रिया, संबंधित चुनौतियों और वैश्विक मानकों के परिदृश्य से अवगत कराया गया। इस अवसर पर विशेषज्ञ द्वारा बीआईएस केयर ऐप का प्रदर्शन भी किया गया। यह एक मोबाइल एप्लिकेशन है जो लाइसेंस सत्यापन, एचयूआईडी (सोने के गहने प्रामाणिकता जांच), अनिवार्य प्रमाणन स्थिति, सरलीकृत उत्पाद प्रमाणन, प्रयोगशाला जानकारी और व्यापक भारतीय मानक डेटा सहित कई सुविधाओं के बारे मे जानकारी प्रदान करता है।

एआर वीआर मूलतत्व एवं अनुप्रयोग पर कार्यक्रम

मीडिया अनुसंधान एवं विकास शिक्षा विभाग द्वारा संस्थान में अंसोज क्रिएशंस प्राइवेट लिमिटेड के समन्वयन में दिनांक 16 से 21 सितम्बर 2024 विषय "एआर वीआर मूलतत्व एवं अनुप्रयोग" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस तकनीकी

प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा एंड्राइड मोबाइल के लिए ऐप बनाने से लेकर विभिन्न अवधारणाओं की गहन जानकारी दी गई।

प्रतिभागियों को ओकुलस और नियंत्रकों के उपयोग के बारे में भी जानकारी मिली। एआर और वीआर में शिक्षण को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बनाकर शिक्षा में क्रांति लाने की क्षमता है। एआर और वीआर के साथ शिक्षक गतिशील पाठ योजनाएँ बना सकते हैं जो अमूर्त अवधारणाओं को जीवंत बनाती हैं। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सुमन पटनायक थी।

इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

एंटीना व वायरलेस प्रौद्योगिकी पर कार्यशाला

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग ने दिनांक 09 से 13 सितम्बर 2024 तक "एंटीना व वायरलेस प्रौद्योगिकी" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस

कार्यक्रम में 23 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को एंटीना व वायरलेस प्रौद्योगिकी के सम्बंधित विषय व मोबाइल टावर व उससे जुड़े यंत्रो व उनके रख-रखाव के बारे में जानकारी दी गई।

प्रतिभागियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु बीएसएनएल के मोबाइल टावर लाइव लोकेशन पर जाकर एंटीना के रेडिएसन को मापना सिखाया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजली पोतनीस, सहायक प्राध्यापक थी।

डिजिटल ट्विन पर कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग ने दिनांक 09 से 13 सितम्बर 2024 तक "डिजिटल ट्विन" विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 70 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को डिजिटल ट्विन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई, जिनमें डिजिटल ट्विन का परिचय, विभिन्न सॉफ्टवेयर और टूल्स का उपयोग करते हुए डिजिटल ट्विन मॉडल कैसे बनाए जाते हैं, विभिन्न उद्योगों में डिजिटल ट्विन के उपयोग के उदाहरणों पर केस स्टडीज का विश्लेषण किया गया तथा डिजिटल ट्विन के भविष्य में संभावित रुझानों और विकास के क्षेत्रों पर विस्तृत चर्चा कि गई। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. पल्लवी भटनागर थी।

इंडक्शन फेज-1 कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग ने दिनांक 09 से 20 सितम्बर 2024 तक इंडक्शन फेज-1 के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को एनईपी-2020, तकनीकी शिक्षकों की उभरती भूमिकाएं और जिम्मेदारियां, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सिद्धांत, कक्षा संचार और प्रस्तुति कौशल, अनुदेशात्मक विधियां, आईसीटी, अनुदेशात्मक मीडिया, कक्षा, प्रयोगशाला, कार्यशाला और उद्योग-आधारित निर्देश के लिए सत्र योजना, आकलन और मूल्यांकन और विनिर्देशों की तालिका के आधार पर प्रश्न पत्र डिजाइन करना, रूब्रिक्स का उपयोग करके विद्यार्थियों के प्रदर्शन का आकलन का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. संजीत कुमार थे व सह-समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखन, डॉ. सी. एस राजेश्वरी, डॉ. वंदना सोमकुंवर तथा डॉ. आर. पी. खम्बायत थे एवं डॉ. के. मनिक्क्वसगम ने संकाय सदस्य के रूप में सहयोग प्रदान किया।

विद्युत अनुप्रयोगों के लिए पावर कन्वर्टर्स पर कार्यक्रम

संस्थान के इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग ने दिनांक 23 से 27 सितम्बर 2024 तक "विद्युत अनुप्रयोगों के लिए पावर कन्वर्टर्स" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 11 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पावर कन्वर्टर्स का परिचय, विभिन्न प्रकारों का अवलोकन, पावर कन्वर्टर्स के विभिन्न अनुप्रयोगों का विश्लेषण, जैसे कि सौर ऊर्जा प्रणाली, इलेक्ट्रिक वाहन, और औद्योगिक नियंत्रण प्रणाली आदि पर व्यावहारिक उपयोग के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किए। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. पल्लवी भटनागर थी।

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग

इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन फॉर इंजीनियरिंग फैकल्टी पर कार्यक्रम

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 22 से 26 जुलाई 2024 तक "इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन फॉर इंजीनियरिंग फैकल्टी" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को नवाचार और इनक्यूबेशन का परिचय, एक अभिनव मानसिकता को बढ़ावा देना, इंजीनियरिंग में उद्यमिता, डिजाइन, प्रोटोटाइपिंग, इंजीनियरिंग में अनुसंधान और विकास, स्टार्ट-अप इनक्यूबेशन प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण, उद्योग सहयोग और साझेदारी, स्थिरता और सामाजिक प्रभाव, नवाचार प्रबंधन और नेतृत्व, कानूनी और नैतिक विचार, मूल्यांकन और निरंतर सुधार, कार्यशालाएं और, केस स्टडीज और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग, इंजीनियरिंग नवाचार में भविष्य के रुझान आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. विपिन कुमार त्रिपाठी व सह-समन्वयक डॉ. एल.एस. राजू थे।

लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के वाणिज्यिक पहलू पर कार्यक्रम

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 24 से 28 जून 2024 तक "लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के वाणिज्यिक पहलू" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का परिचय, लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला की मूल बाते,, प्रमुख घटक और प्रक्रियाएं, आपूर्ति श्रृंखला की रणनीतियां, योजना, पूर्वानुमान, योजना और डिजाइनिंग, खरीद और आपूर्तिकर्ता प्रबंधन, खरीद प्रक्रिया, आपूर्तिकर्ता चयन मानदंड और मूल्यांकन तकनीके, आपूर्तिकर्ता संबंध प्रबंधन और सहयोग रणनीतियां, परिवहन प्रबंधन, लॉजिस्टिक्स योजना और डिजाइन तकनीक, वाणिज्यिक लॉजिस्टिक्स के वितरण की रणनीतियां, गोदाम प्रबंधन, सिद्धांत, मूल्य निर्धारण रणनीतियां और लागत प्रबंधन, मूल्य निर्धारण संबंधी बुनियादी बाते, रिवर्स लॉजिस्टिक्स और सतत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, भविष्य के रूझान और उभरती प्रौद्योगिकियां विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. वंदना सोमकुंवर थी।

सॉलिड्स एंड ऑटोकैड पर कार्यक्रम

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 02 से 06 सितम्बर 2024 तक "सॉलिड्स एंड ऑटोकैड" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में गुजरात एवं मध्यप्रदेश के अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को उत्पाद विकास का परिचय और ओपीसीएडी मॉडलिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग, सीएसजी के सिद्धांत, बी-रेप, फीचर आधारित पैरामीट्रिक उत्पाद विकास, ठोस वस्तु मॉडलिंग के लिए सॉलिडवर्क्स/ऑटोकैड और उत्पाद विकास अनुप्रयोगों में इसके उपयोग, औद्योगिक ड्राइंग के लिए ड्राफ्टिंग के लिए ऑटोकैड और उत्पाद विकास अनुप्रयोगों में इसके उपयोग, इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों में सॉफ्ट टूल्स पर व्यावहारिक ज्ञान आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रवि कुमार गुप्ता व सह-समन्वयक डॉ. वंदना सोमकुंवर थी।

इंडक्शन फेज-1 कार्यक्रम

मैकेनिकल अभियांत्रिकी शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 08 से 19 जुलाई 2024 तक इंडक्शन फेज-1 के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को एन.ई.पी. 2020 के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। तकनीकी शिक्षा प्रणाली में एन.ई.पी. 2020, तकनीकी शिक्षकों की उभरती भूमिकाएं और दायित्व तथा व्यवसाय नैतिकता, डोमेन ऑफ लर्निंग, संशोधित ब्लूम टैक्सोनॉमी, डेव एंड क्रैथवोल टैक्सोनॉमी, परिणाम आधारित शिक्षा, पाठ्यक्रम और कार्यक्रम स्तर पर ओ.बी.सी-परिणाम और उनका मानचित्रण, शैक्षणिक प्रदर्शन सूचकांक, कक्षा संचार और प्रस्तुति कौशल, परिणाम आधारित शिक्षण, शिक्षण दृष्टिकोण, मिश्रित और प्रवाहपूर्ण शिक्षण, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेस (ओ.ई.आर), मीडिया डिजाइन सिद्धांत, पाठ्यक्रम योजना तैयारी, गैग्ने के निर्देश की घटनाएँ, रूब्रिक्स, माइक्रो शिक्षण अभ्यास आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. के.के. जैन व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला, डॉ. एस.एस. केदार एवं डॉ. एम.ए. रिजवी थे।

पाठ्यचर्या विकास एंव मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम

एनईपी 2020 के संदर्भ में पाठ्यक्रम और मूल्यांकन सुधार पर कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यचर्या विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 05 से 09 सितम्बर 2024 तक "एनईपी 2020 के संदर्भ में पाठ्यक्रम और मूल्यांकन सुधार" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के अभियांत्रिकी व पॉलिटेक्निक संस्थान के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन के संबंध में एनईपी: 2020 दस्तावेज में दी गई अवधारणा को विभिन्न राज्यों के एनईपी: 2020 संदर्भित परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम के निर्माण में कैसे शामिल किया जा सकता है, इस पर गहन चर्चा एवं विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों ने राज्य में एनईपी संदर्भित पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता पर भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले व सह-समन्वयक डॉ. रोली प्रधान थी।

पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया, डिजाइन, मूल्यांकन और कार्यान्वयन पर कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यचर्या विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में दिनांक 09 से 13 सितम्बर 2024 तक "पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया, डिजाइन, मूल्यांकन और कार्यान्वयन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान पाठ्यक्रम नियोजन से लेकर पाठ्यक्रम मूल्यांकन तक के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई, जो एनईपी: 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने का पहला कदम है। विभिन्न राज्यों के केस स्टडीज़ भी साझा किए गए। प्रतिभागियों को इससे जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं को बहुत गहराई से समझाया गया। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले व सह-समन्वयक डॉ. आर.के. कपूर थे।

एम.एस.बी.टी.ई. परियोजना-कार्यशाला

संस्थान के पाठ्यचर्या विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा पुणे में दिनांक 22 से 26 जुलाई 2024 तक "एम.एस.बी.टी.ई. परियोजना-कार्यशाला : विभिन्न सेमेस्टरों की पाठ्यक्रम सामग्री का विकास" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम 79 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान संस्थान ने एनईपी-2020 और एनसीआरएफ 2023 के दिशा-निर्देशों के अनुसार एम.एस.बी.टी.ई. महाराष्ट्र राज्य के लिए 49 डिप्लोमा कार्यक्रमों के 5 वें सेमेस्टर के लिए 165 पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया। उक्त कार्यशाला में संस्थान के 06 संकाय सदस्यों ने महाराष्ट्र के 79 तकनीकी शिक्षकों के साथ पाठ्यक्रम के विवरण का कार्य किया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे।

विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

हिंदी दिवस पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में दिनांक 14 सितम्बर 2024 को "हिंदी दिवस" मनाया गया। विस्तार केन्द्र समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे द्वारा हिंदी प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया तथा भारत के विद्वानों द्वारा हिंदी के प्रति उनकी अभिव्यक्तियों का प्रदर्शन किया गया।हिंदी भाषा के वक्तव्य को प्रचार- प्रसार हेतु पटल पर प्रदर्शित किया गया।

गुजरात विस्तार केन्द्र के 50 वर्ष पूर्ण

09 सितम्बर 2024 को गुजरात विस्तार केन्द्र के 50 वर्ष पूर्ण होने पर विस्तार केन्द्र के कर्मचारियों द्वारा स्थापना दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गुजरात विस्तार केन्द्र के पूर्व समन्वयक एवं प्रो शशिकांत गुप्ता थे तथा अतिथि श्री सुरेश कलगुडे यूडीसी (सेवानिवृत) एवं आरसीटीआई प्रो. उमेश पाटनी थे। समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे ने गुजरात विस्तार केन्द्र की 50 वर्ष की यात्रा के बारे में बताया तथा सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बनाने के लिए विभिन्न भावी योजनाओं एवं गतिविधियों की भी जानकारी दी। इस अवसर पर कर्मचारियों के परिवार भी उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में दिनांक 01 से 15 सितम्बर 2024 तक "स्वच्छता पखवाड़ा" मनाया गया। विस्तार केन्द्र के समन्वयक प्रोफेसर निशीथ दुबे व स्टॉफ श्री टी. के. रॉय, श्री अजय जाटव आदि ने विस्तार केन्द्र पर स्वच्छता अभियान

चलाया। इस क्रम में सभी ने संस्थान के परिसर में, ट्रेनी गेस्ट हाउस, कम्प्यूटर लेब व हॉल की साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया।

शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में दिनांक 05 सितम्बर 2024 को "शिक्षक दिवस" मनाया गया। विस्तार केन्द्र के कर्मचारियों डॉ. राधाकृष्णन के उच्च जीवन आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। इस अवसर पर डॉ. निशीथ दुबे, श्री टी.के.रॉय व श्री अजय आदी उपस्थित रहे।

जीआईएस पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद में राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, गुजरात के समन्वयन में विषय "जीआईएस पर प्रशिक्षण" पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम 180 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में विस्तार केन्द्र ने राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, गुजरात के राज्य

सलाहकार, जिला सलाहकार, इंजीनियरों, पंचायत स्तर पर टेक्निकल सहायक, कम्प्यूटर आपरेटर, आदि को जीआईएस पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विस्तार केन्द्र अहमदाबाद जून से सितंबर माह 2024 तक राज्य ग्रामीण विकास संस्थान के साथ कुल 09 प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित कर चुका है।

एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 29 जुलाई 2024 को चिल्ड्रन रिसर्च यूनिवर्सिटी, गांधीनगर में "एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए रणनीतियाँ" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 105 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रो. निशीथ दुबे ने शिक्षक-विद्यार्थी केन्द्रित गतिविधियों, विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम एनईपी- 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन की रणनीतियों को समझाया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. संजय कुमार गुप्ता, वाइस चांसलर थे तथा कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे तथा सह समन्वयक डॉ. मिनलबा जडेजा थी।

मशीन लर्निंग पर कार्यशाला पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 12 से 17 अगस्त 2024 तक ब्रेनी बीम प्राइवेट लिमिटेड तथा इन्फोलेब्ज़ आईटी सर्विसेज के समन्वयन में "मशीन लर्निंग" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में "मशीन लर्निंग, पायथन लाइब्रेरीज़ का परिचय" विषय पर विस्तृत विवरण दिया। तथा डॉ. निशीथ दुबे, द्वारा "एनईपी

2020" पर व्याख्यान देकर नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से बताया। सभी प्रशिक्षुओं ने इन्फोलेब्ज़ आईटी सर्विसेज कंपनी का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से मशीन लर्निंग को समझा तथा मशीन लर्निंग की क्षमता और भविष्य की योजनाओं को जाना। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे तथा सह समन्वयक प्रो. हर्षद परमार तथा प्रो. जास्मिन जे करगथला थे।

संचार प्रणालियाँ एवं नेटवर्क पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 05 से 09 अगस्त 2024 तक "संचार प्रणालियाँ एवं नेटवर्क पर प्रशिक्षण कार्यक्रम" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संचार प्रणालियाँ एवं नेटवर्क की आधुनिक संचार तकनीकों और नेटवर्किंग के सिद्धांतों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को तकनीकी ज्ञान और कौशल प्रदान करना है ताकि वे संचार प्रणालियों और नेटवर्क के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर सकें। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सीमा वर्मा थी तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. अंकुर बंसल, श्री अनिरुद्ध, श्री मुकुन्द भोपले ने सहयोग प्रदान किया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ओपन यूनिवर्सिटी का भ्रमण

उच्च शिक्षा को भविष्योन्मुखी बनाने हेतु शिक्षकों को एडवांस टेक्नोलॉजी का व्यावहारिक उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करना के उद्देश्य से संस्थान निदेशक प्रो चारूचन्द्र त्रिपाठी, प्रो मनीष भार्गव तथा डॉ. निशीथ दुबे ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की

कुलपति प्रो एमी उपाध्याय भेंट की तथा दूरस्थ शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रभावी उपयोग के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और व्यावसायिक शिक्षा में एडवांस टेक्नोलॉजी के व्यावहारिक प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की योजना पर विस्तृत चर्चा की।

सतत विकास हेतु हरित भवन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 29 जुलाई से 02 अगस्त 2024 तक "सतत विकास हेतु हरित भवन" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हरित भवन निर्माण के लिए नवीनतम तकनीक का उपयोग, ग्रीन बिल्डिंग के तत्व,

पानी का सतत उपयोग, ग्रीन बिल्डिंग रेटिंग सिस्टम, इंडोर एयर क्वालिटी, ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन, सामग्री सूक्ष्म जलवायु और ऊर्जा खपत, आदि पर विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. रमेश गुप्ता बुरेला तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. अनुपम सिंह, डॉ. कृपेश चौहान, डॉ. निशीथ दुबे, डॉ. दयाशंकर कौल, श्री अमितावा हाल्दर ने सहयोग प्रदान किया।

विद्युत प्रणाली में विद्युत गुणवत्ता संबंधी समस्याओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 24 से 28 जून 2024 तक "विद्युत प्रणाली में विद्युत गुणवत्ता संबंधी समस्याएं" विषय पर कार्यक्रम आजोयित किया गया। इस कार्यक्रम में निरमा विश्वविद्यालय के 07 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को बिजली की गुणवत्ता के मूल सिद्धांतों, मानकों और

नियमों, बिजली में प्रारंभिक समस्या की पहचान, हार्मोनिक मिटिगेशन तकनीक, एक्टिव फिल्टर, हार्मोनिक मानकों और इसके प्रभाव, पावर क्वालिटी ऑडिट से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को तकनीकी ज्ञान और कौशल प्रदान करना है ताकि वे संचार प्रणालियों और नेटवर्क के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर सकें।

प्रतिभागियों ने ए.एम.टेक प्राइवेट लिमिटेड का भ्रमण किया तथा बिजली की गुणवत्ता सुधारने की प्रक्रिया को समझा। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ वी.आर. पटेल, डॉ अमित संत, श्री विजय शाह, डॉ रूपल कपाड़िया, श्री प्रियंग जोशी, डॉ. एसआर दोशी, डॉ. बीएन सुथार, श्री चिराग चौहान व डॉ. एसएन पंड्या ने सहयोग प्रदान किया।

क्षमता निर्माण पर कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 27-30 अगस्त 2024 तक "क्षमता निर्माण" विषय पर राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय में कार्यक्रम आजोयित किया गया। इस कार्यक्रम में राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय से 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आंनद भालेराव व प्रो. सी. सी. मंडल ने की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को शोध में विभिन्न प्रेरक सिंध्दातों और कारकों को बारे में चर्चा करते हुए बेहतर शोध अनुभव प्राप्त करने के लिए व्यवहार में सिध्दातों के महत्व से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को शोध में उत्कृष्ठता प्राप्त करने के लिए व्यापक शैक्षणिक समुदाय में योगदान देने के लिए आवश्यक उपकरण और मानसिकता से अवगत कराना था। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे तथा तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ अजंना तिवारी, प्रोफेसर सी. सी. मंडल, प्रो. आंनद भालेराव ने सहयोग प्रदान किया।

ग्राम स्तर पर कचरा प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केन्द्र अहमदाबाद ने दिनांक 27-28 जून व 02 से 05 जुलाई 2024 तक "ग्राम स्तर पर कचरा प्रबंधन" विषय पर तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आजोयित किये गये। इस कार्यक्रम में राज्य ग्रामीण विकास संस्थान (एसआईआरडी) से कुल 79 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों को स्वच्छ भारत मिशन के लिए विभिन्न अनुप्रयोगों के बारे में, विभिन्न बेकार भूमि का वेस्ट हेतु उपयोग, विभिन्न पोर्टल पर प्रदर्शित ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण स्थल

पर वेस्ट मेनेजमेंट के डाटा का अवलोकन, वेस्ट का प्रबंधन, वेस्ट मेनेजमेंट हेतु पोर्टल पर ग्राम चिन्हित करना, सॉलिड व लिक्विड वेस्ट को कम्पोस्ट मे बदलना, जियोइन्फोर्मेटिक्स टेक्नोलॉजी का कचरा प्रबंधन मे उपयोग करना आदी पर विस्व्यातृत ख्यान दिये गये। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे व श्री धवल पारेख, प्रोजेक्ट इंजीनियर, एसआईआरडी थे।

हरित प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान एवं नवाचार पार्क का भ्रमण

संस्थान निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने दो दिवसीय 07-08 अगस्त 2024, गुजरात विस्तार केंद्र भ्रमण के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मलित हुए। हरित प्रौद्योगिकी पर अनुसंधान एवं नवाचार पार्क में निदेशक डॉ. चारुचंद्र त्रिपाठी ने वन एवं पर्यावरण विभाग, गुजरात सरकार के प्रधान सचिव एवं आईएएस श्री संजीव कुमार के समक्ष विस्तृत परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया। परियोजना के मुख्य बिंदु हरित प्रौद्योगिकी प्रदर्शन किट का विकास, हरित प्रौद्योगिकी विकास, शोधकर्ताओं एवं शिक्षकों को प्रशिक्षण, शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग एवं विद्यार्थियों के बीच किताबी ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान के बीच के अंतर को कम करना, विद्यार्थियों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम विकसित करना जो भविष्य में हरित प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग प्रशस्त करेंगे है।

संस्थान एवं सिल्वर ऑक यूनिवर्सिटी के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

संस्थान निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने सिल्वर ओक यूनिवर्सिटी (एसओयू) के कुलसचिव प्रो. मित के. शाह ने 08 अगस्त 2024 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत दोनों संस्थान इंजीनियरिंग, पॉलिटेक्निक, फार्मेसी, प्रबंधन और उच्च शिक्षा के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, संयुक्त बहुविषयक कार्यक्रम, एनआईटीटीटीआर, भोपाल के सीओई में विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप और प्रशिक्षण का आयोजन करेंगे। इस अवसर पर माननीय कुलपति, डॉ. सौरिन आर. शाज, डॉ. पिना एम. भट्ट, डॉ. निशीथ दुबे एवं डॉ. मनीष भार्गव उपस्थित थे।

सिग्मा मैकोट्रॉनिक्स अहमदाबाद का भ्रमण

संस्थान निदेशक प्रो चारूचन्द्र त्रिपाठी ने सेमीकंडक्टर और अन्य उद्योगों में स्वदेशी मशीनों की आवश्यकता और उपयोगिता को समझते हुए ऐसी मशीनों को विकसित करने के लिए सिग्मा मैकोट्रॉनिक्स अहमदाबाद, के निदेशक श्री हितेश रावल से भेंट की समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत दोनों संस्थान सेमीकंडक्टर उद्योग की आवश्यकता के अनुसार स्वदेशी मशीनों के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएंगे।

रचना विशेष पृष्ठ

गुरु पूर्णिमा: ज्ञान और श्रद्धा का पर्व

गुरु शब्द की व्याख्या
संस्कृत में "गु" का अर्थ है अंधकार और "रु" का अर्थ है दूर करना।

गुरु वह है जो हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरु हर किसी के जीवन का आधार होते है, गुरु के बिना सफल जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर रखा गया है। कहा जाता है कि एक बच्चे की पहली गुरु माँ होती है, जो हमें इस संसार से अवगत कराती हैं। वहीं दूसरे स्थान पर गुरु होते हैं जो हमें ज्ञान व भगवान की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं।

"जीवन एक अनोखी यात्रा है, जहां अदृश्य से दृश्य तक, भौतिक से दिव्य तक, अल्पकालिक से अनंत तक, गुरु ही हमें ले जाते है

गुरु पूर्णिमा, भारत में एक महत्वपूर्ण और श्रद्धेय पर्व है जिसे गुरु के प्रति सम्मान और श्रद्धा व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।आषाढ़ मास की पूर्णिमा के पावन अवसर पर मनाया जाने वाला गुरु पूर्णिमा का पर्व भारत ही नहीं, नेपाल और भूटान जैसे देशों में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसे गुरु व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है, क्योंकि इस दिन महान महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ था। गुरु का महत्व हमारे जीवन में सबसे अधिक होता है। वे हमारे अंतर्मन में ज्ञान का दीप जलाते है और सही मार्गदर्शन कर हमें सफलता के पथ पर आगे बढ़ाते है। हमें अनुशासन और ज्ञान का ऐसा महत्व सिखाते है, जिससे हम सही आचरण और कर्तव्यों के साथ अपने कर्मपथ पर आगे बढ़ पाते है। इसलिए **कबीरदास जी** ने अपने एक दोहे में गुरु के महत्व को इस प्रकार बताया है:

"गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपणे, गोविंद दियो बताए।।"

अर्थात, जब गुरु और ईश्वर एक साथ खड़े हों, तो सबसे पहले गुरु को ही प्रणाम करना चाहिए क्योंकि गुरु ही ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग दिखाते है।

संस्कृत का एक और बड़ा सूंदर वाक्य है:
"गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोक्ष। गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।"

इसका अर्थ है कि गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरु के बिना मोक्ष नहीं मिलता, गुरु के बिना सत्य का अनुभव नहीं हो सकता और गुरु के बिना दोषों का नाश नहीं हो सकता।

गुरु बिना ज्ञान अधूरा है, गुरु बिना जीवन निस्सार है, उनका मार्गदर्शन जीवन का सबसे बड़ा उपहार हैं। गुरु हमें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति प्रदान करते हैं।

अम्बर से लेकर धरा तक जिससे भी जीवन जीने की कला मिले यथार्थ में वही गुरु है ।।

अतः मैंने जिनसे भी जीवन में कुछ सीखा है उनको मेरे गुरु होने के लिए आभार और उन्हें मेरा सादर नमन।।

गुरु पूर्णिमा की हार्दिक बधाई।।"

सुश्री हर्षा अत्रे

हिंदी दिवस

हिन्दी भाषा को अपनाऐं,

प्यार से चहुं ओर फैलायें,

क्षेत्रियता से अलग होयें,

हिन्दी की व्यथा को समझें,

राजनीति ने अलग होयें,

हिन्दी के अपमान से ,

भारत भी मान खोयेगा,

हिन्दी भारत का गर्व है,

हिन्दी दिवस प्यारा पर्व है,

सम्मानित हो भाषा,

हम सबकी अभिलाषा,

सदा मनायें हिन्दी दिवस,

स्वार्थ छोड़ें लें शपथ,

जोड़े नाता हिन्दी से,

ना हो अपमान हिन्दी का,

हम सब भी यही चाहते

और जागृत हैं ये सरकार,

भारत मां के माथे की बिंदी,

पहचान भारत की शान,मान

मीरा ने मोहक काव्य लिखा,

तुलसी ने रामायण रची,

संतों विद्वानों की भाषा,

भारत की सब भाषा में प्यारी,

सबको हमने गले लगाया,

दिया यथोचित सम्मान,

अधिक जनों हिन्दी अपनाया,

हिन्दी फिल्मों ने धूम मचाये,

विदेशियों को अति भाई,

सरलता अपनी सभी को भाई,

भारत से जुड़ी सदियों से,

भारत की चमकती बिंदी,

मैं हूं,सबकी प्यारी हिन्दी,

जय जय हिन्दी जय जय हिन्दी।

मेरा देश

मेरा देश महान,

हम इसकी संतान,

भारत वीर हैं,

हैं तन मन धन निछावर,

सब समर्पण करते,

प्रण आज हम करते,

हर पल होगा देश के लिए,

रक्त की आखिरी बूंद होगी,

देश के लिए है हर जवान,

भारत से ही हम हैं,

वरना निर्जीव तन है,

देश पहचान और शान,

खड़े हम सीना तान,

देखेगा सारा जहान,

छू लेंगे आसमान,

भर ली है उड़ान,

पंख पसारे तुझे निहारे,

मेरे प्यारे देश,

आया हवाओं से संदेश,

ओ प्यारे देश।

श्रीमती वंदना त्रिपाठी

ASSESSMENT OF STUDENTS LEARNING
Organ, Tissue & Body Donation
राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal
Indian Standards

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल-462002

NATIONAL SPACE DAY

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

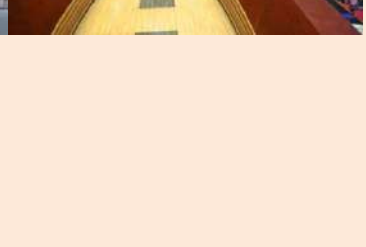

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

पेड़ लगाने से होगी धरती मां की रक्षा : प्रो . त्रिपाठी

भोपाल . प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पर्यावरण दिवस पर एक पेड़ मां के नाम अभियान की शुरुआत की थी . इस अभियान के तहत नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (निटर) परिसर में शुक्रवार को पौधे रोपे गए . इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो . सी .सी . त्रिपाठी ने कहा कि वृक्ष का स्थान मानव जीवन में मां की तरह है . मां की आंचल में जिस तरह बच्चा सुरक्षित रहता है, उसी तरह वृक्ष के आंचल में धरती एवं वातावरण सुरक्षित रहता है . ऐसे अभियान पर्यावरण को खुशहाल और सकारात्मक बनाते हैं . ऐसे में पौधारोपण कर न केवल हम पर्यावरण को बचाएंगे बल्कि वनीकरण में भी अपनी भूमिका निभाएंगे .

कौशल और क्षमता पर फोकस करें स्टूडेंट्स

- निटर निदेश प्रो . सीसी त्रिपाठी ने दिया संदेश
- टेक्निकल के साथ-साथ टीचिंग स्किल्स भी देंगे

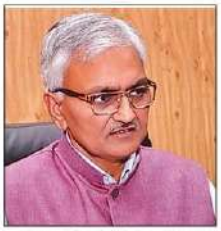

भोपाल, 2 जुलाई. एनआईटीटीटीआर भोपाल ने डीम्ड यूनिवर्सिटी बनने के बाद अपने यहाँ बिभिन्न क्षेत्रों में अकादमिक प्रोग्राम प्रारम्भ किये है. सभी प्रोग्राम्स विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यकता,जॉब ओरिएंटेड एवं क्षमता संवर्धन पर आधारित होंगे.

निटर निदेशक प्रो सी सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में कहा की स्टूडेंट्स सिर्फ डिग्री नहीं वरन कौशल एवं क्षमता संवर्धन पर फोकस करे. रिसर्च सिर्फ पेपर पब्लिकेशन तक सीमित न होकर प्रोडक्ट के रूप में कन्वर्ट हों जो समाज की समस्याओं का हल प्रदान करें. संस्थान के स्कूल ऑफ साइंसेज,स्कूल ऑफ इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ,स्कूल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज एवं स्कूल ऑफ क्रिएटिव एजुकेशन एंड लिबरल आर्ट्स के अंतर्गत विभिन्न विभागों के फैकल्टी मेंबर्स अपने अपने क्षेत्र की लेटेस्ट एवं इमर्जिंग टेक्नोलॉजी के एरिया में पीएचडी एवं पीजी प्रोग्राम्स का संचालन करेंगे. यहाँ रिसर्च करने वाले शोधार्थियों को संस्थान के नवीन संसाधन युक्त सेंटर ऑफ एक्सेलेन्स की प्रयोगशालाएं, इंडस्ट्रीज की रिसर्च लैब्स के साथ साथ निटर के एमओयू पार्टनर्स की लैब्स में भी कार्य करने की सुविधा मिलेगी. यहाँ टेक्निकल कौशल की साथ साथ टीचिंग की अतिरिक्त स्किल्स भी प्रदान की जाएंगी. निटर भोपाल में स्पेस वेदर, जीपीएस, लेजर भौतिकी, ड्रग डिज़ाइन और डिस्कवरी, नैनोमटेरियल्स, मल्टीफंक्शनल स्मार्ट कंपोजिट, बिग डेटा एनालिटिक्स, ग्रीन कंप्यूटिंग, इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी,सेमीकंडक्टर पैकेजिंग, फाइव एवं सिक्स जी संचार, आईओटी, ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग और डिजाइन थिंकिंग , कौशल विकास, सोशल मीडिया मैनेजमेंट , डिजिटल कंटेंट एवं अन्य क्षेत्रों में शोध कार्य किया जायेगा.

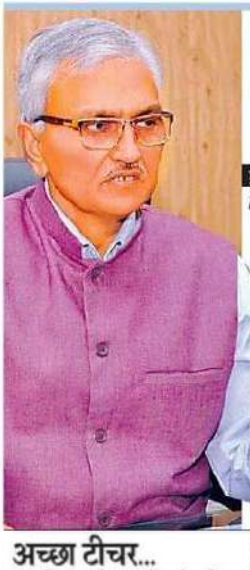

निटर के निदेशक बोले-डिजिटल युग में ऐसे शिक्षक चाहिए, जो टीचिंग को प्रोफेशन नहीं पैशन माने

छात्रों में बदलाव लाने वाला इनोवेटर ही अच्छा टीचर

प्रो. सीसी त्रिपाठी
निदेशक, निटर

पत्रिका साक्षात्कार MONDAY मोटिवेशन

यह डिजिटल युग है। एआइ सर्वव्यापी है। आज अच्छा टीचर वही जो इनोवेटर, क्रिएटर व डेवलपर हो। जो टीचिंग को पैशन के रूप में लें। हम इस पर काम कर रहे हैं। हमारा फोकस ऐसी शोध पर है, जो पब्लिकेशन तक सीमित न रहे, प्रोडक्ट में बदले। समाज की समस्याएं दूर करें। यह कहना है राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी का। उनसे हुई बातचीत के अंश...।

■ ***तकनीकी क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहा है, शिक्षकों को कैसी तैयारी की जरूरत है?***

नई टेक्नोलॉजी ने कोर्स कंटेंट को बदला है। एक से दूसरी पीढ़ी में बदलाव की गति तीव्र है। टीचर्स नए विषयों के साथ टेक्नोलॉजी पर भी फोकस करें। टीचिंग-लर्निंग की जरूरतों में भी बदलाव हुआ है। अच्छा टीचर वह है जो इनोवेटर, क्रिएटर और डेवलपर है। छात्रों में में ट्रांसफॉर्मेशन ला सके। ताकि कौशल क्षमता का विकास हो। शिक्षकों को तकनीकी विषयों में लैब्स में काम करना होगा।

■ ***निटर ने कुछ एकेडमिक प्रोग्राम शुरू किए हैं, इससे छात्रों को क्या फायदा होगा?***

नई तकनीक के क्षेत्र में पी.एचडी एवं पीजी प्रोग्राम्स शुरू हो रहे हैं। कोर्स लर्निंग बाय डूइंग एंड लर्निंग बाय रिसर्च पर बेस्ड हैं। शोधार्थियों को संसाधनयुक्त सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की लैब, इंडस्ट्रीज की रिसर्च लैब्स में काम करने की सुविधा मिलेगी। नई तकनीक के साथ टीचिंग स्किल्स सिखाएंगे, ताकि वे अच्छा टीचर बनें। यहां होने वाले शोध से समाज व इंडस्ट्रीज की समस्याओं को हल करने में मदद मिलेगी।

■ ***इंजीनियरिंग कॉलेजों की स्थिति ठीक नहीं है, प्लेसमेंट के लिए क्या प्लान हैं?***

आज अधिकांश संस्थानों से पास इंजीनियरों के पास सिर्फ सैधांतिक नॉलेज है। इंडस्ट्री की जरूरत के अनुसार स्किल्स नहीं है। निटर देश में आउटकम बेस्ड करिकुलम के लिए जाना जाता है। हमने कई तकनीकी संस्थानों के लिए करिकुलम बनाए हैं। इसमें इंडस्ट्री की की जरूरतों को फोकस किया है, ताकि इंडस्ट्री को रेडी इंजीनियर मिले। ऐसे में प्लेसमेंट की कमी नहीं होगी। शेष@पेज 08

अच्छा टीचर...

■ ***स्किल डेवलपमेंट के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं?***

कई संस्थानों के साथ एमओयू किया है, ताकि स्टूडेंट्स को इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स के साथ काम कर सके। निटर में ड्रोन टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी व ऑटसोर्सेड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्टआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन मशीन लर्निंग के लिए स्किलिंग सेंटर शुरू हो रहा है।

■ ***कितने शिक्षकों को प्रशिक्षण दे चुका है निटर, उससे इंजीनियरिंग कॉलेज में क्या परिवर्तन आया?***

निटर भोपाल ने लाखों टीचर्स को ऑनलाइन एवं ऑफलाइन ट्रेनिंग दी है। एनबीए एक्रीडिएशन व अन्य ट्रेनिंग के बाद टीचिंग स्किल्स में निखार आया है। इंजीनियरिंग कॉलेज की प्रोसेस क्वालिटी सुधरी है। ट्रेनिंग के बाद आउटकम बेस्ड असेसमेंट, ई-कंटेंट डेवलपमेंट, लेबोरेटरी में नवाचार और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट आदि में दक्षता आई है।

■ ***आज एआइ की काफी डिमांड है, शिक्षकों को इसके लिए किस तरह तैयार कर रहे हैं?***

एआइ आज सर्वव्यापी है। दो-तीन साल में देश में एआइ और अन्य क्षमताओं में एडवांस स्किल वाले 10 लाख से अधिक इंजीनियरों की जरूरत होगी। इसीलिए निटर इसके लिए उन्हें तैयार कर रहा है।

■ ***सेंटर ऑफ एक्सीलेंस लैब में छात्र कैसे रिसर्च कर सकेंगे?***

संस्थान के सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस में इंडस्ट्री 4.0 के अनुरूप 11 उच्च-तकनीकी लैब हैं। यहां इंडस्ट्री के लिए नई प्रोसेस एवं प्रोडक्ट से रिलेटेड रिसर्च होती है। स्टूडेंट्स यहां रिसर्च कर अपने स्टार्टअप एवं उद्योग स्थापित कर सकते हैं।

एनआईटीटीटीआर ने उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान के साथ नवाचार और आपसी सहयोग के लिए किया समझौता

भोपाल। एन.आई.टी.टी.टी.आर ने उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान (आई.ई.एच.ई), भोपाल के साथ नवाचार और आपसी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू) पर हस्ताक्षर किये है। इस अवसर पर एन.आई.टी.टी.टी.आर भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इस समझौते से दोनों ही संस्थान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे तथा निटर अपने उपलब्ध सभी संसाधन आई.ई.एच.ई. के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के हित के लिए साझा करेगा। आई.ई.एच.ई के निदेशक प्रो. प्रग्येश कुमार अग्रवाल ने कहा कि निटर के साथ जुड़कर हमारा संस्थान एक नया अध्याय शुरू कर रहा है। निटर भोपाल ने शिक्षक-प्रशिक्षण एवं ई-कंटेंट डेवलपमेंट के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की है। हम ई-कंटेंट डेवलपमेंट में उनके अत्यधिक नवीन कौशल को अपनाना और सीखना चाहते हैं। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से मूक्स, ई-कंटेंट डेवलपमेंट, शैक्षणिक अनुसंधान, संकाय-विद्यार्थी विनिमय, अल्पावधि कार्यक्रम, क्षमता निर्माण, इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, छात्रों में बहु-कौशल विकास, विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्श में सहायता आदि के क्षेत्र में आपसी सहयोग से कार्य करेंगे।

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान और एनआईटीटीटीआर के बीच हुआ एमओयू

भोपाल। उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल ने एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल के साथ मिलकर अनुसंधान, नवाचार और आपसी सहयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से एम.ओ.यू. हस्ताक्षर कर एक नया आयाम स्थापित किया गया है। इस अवसर पर एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस समझौते से दोनों ही संस्थान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर स्थापित करेंगे तथा निटर अपने उपलब्ध सभी संसाधन आई.ई.एच.ई. के साथ विद्यार्थियों के हित के लिए साझा करेगा। उन्होंने इस बात को भी रेखांकित किया कि व्यावहारिक प्रशिक्षण संस्थानों को यह उद्देश्य होना चाहिए कि किस प्रकार अधिकाधिक भौतिक और मानव संसाधन को साझा कर राष्ट्र की प्रगति में योगदान कर सकते हैं। आई.ई.एच.ई के संचालक प्रो. प्रवेश कुमार अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि निटर के साथ जु?कर हमारा संस्थान एक नया अध्याय शुरू कर रहा है। निटर भोपाल ने शिक्षक-प्रशिक्षण एवं ई-कंटेंट डेवलपमेंट जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल की है। हम ई-कंटेंट डेवलपमेंट में उनकी विशेषज्ञता और नवीन कौशल को अपनाना और सीखना चाहते हैं। इस एम.ओ.यू. से संस्थान को मूक्स डेवलप करने में सहयोग प्राप्त होगा। इसके अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से मूक्स, ई-कंटेंट डेवलपमेंट, शैक्षणिक अनुसंधान, फेकल्टी डेवलपमेंट, संकाय-विद्यार्थी विनिमय, अल्पावधि कार्यक्रम, क्षमता निर्माण, इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, छात्रों में बहु-कौशल विकास, विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, अनुसंधान, परामर्श में सहायता, एक्सपीरियंसियल लर्निंग आदि के क्षेत्र में आपसी सहयोग से कार्य करेंगे। एन.आई.टी.टी.टी.आर भोपाल ने अपनी भावी ड्रोन टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी व ऑटसोर्सेड सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओसेट) की योजनाओं पर भी आई.ई.एच.ई से विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर आई.ई.एच.ई. से डॉ. रामकृष्ण श्रीवास्तव, डॉ. महेंद्र सिंघई व निटर संस्थान से संकाय सदस्य प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. एस. एस. केदार व अन्य संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

निटर में मनाया गुरु पूर्णिमा महोत्सव

भोपाल, 22 जुलाई. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (निटर) श्यामला हिल्स भोपाल में गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया.

इस अवसर पर रिसर्च स्कॉलर्स को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि गुरु पूर्णिमा का पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है. यह पर्व हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को जीवित रखने में सहायक है. भारतीय परंपराओं में ज्ञान और विज्ञान का समावेश अद्वितीय और गहन है, यह समावेश एक समग्र और संतुलित जीवन शैली को प्रोत्साहित करता

है, जो आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रथाओं के साथ भी सामंजस्य बैठाता है. उल्लेखनीय है कि निटर के निदेशक रिसर्च स्कॉलर्स व विद्यार्थियों के साथ नवाचार एवं रिसर्च प्रोग्रेस पर निरंतर चर्चा करते रहते हैं. निटर के डीन, स्कूल ऑफ साइंसेज प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि गुरु पूर्णिमा न केवल शैक्षिक संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए भी प्रेरणा स्रोत है. यह दिन हमें एक बेहतर इंसान बनने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है. इस अवसर पर डॉ. दीपक सिंह, डॉ. हुसैन जीवाखान सहित फैकल्टी मेंबर्स, रिसर्च स्कॉलर्स एवं स्टाफ मेंबर्स भी उपस्थित थे.

Knowledge, science are embedded in Indian culture, traditions: Prof Tripathi

■ Staff Reporter

ON THE occasion of *Guru Purnima* at NITTTR, Bhopal, Director Professor C C Tripathi addressed research scholars and said that the festival of *Guru Purnima* holds a very important place in Indian culture and tradition.

This festival is helpful in keeping our cultural values and traditions alive. The integration of knowledge and science in Indian traditions is unique and profound, this integration encourages a holistic and balanced lifestyle, which is also in harmony with modern scientific research and practices.

On this occasion, Professor Tripathi reviewed the progress report of research scholars in detail, and said that business strategy is also necessary along with innovation. The researchers doing research in our institute always have the facility to work in the high-tech and industrial research labs equipped with new resources of the institute. The research scholars should do research work related to new process and product innovation. It is noteworthy that the Director of NITTTR continuously discusses and review innovation and research progress with research scholars and students. Professor P K Purohit, Dean, School of Sciences, said that *Guru Purnima* is not only important for educational institutions, but it is also a source of inspiration for every person in the society. This day inspires us to become a better person and bring positive change in the society. On this occasion, Dr Deepak Singh, Dr Hussain Jeeva Khan including faculty members, research scholars and staff members were also present.

निटर में भारतीय ज्ञान परंपरा पर ऑनलाइन कोर्स प्रारंभ

भोपाल, 5 अगस्त. राजधानी भोपाल के श्यामला हिल्स स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स एंड रिसर्च (निटर) द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा पर ऑनलाइन कोर्स प्रारंभ किया गया है.

यह संस्थान भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित है. यह मैसिव ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम स्वयं पोर्टल पर उपलब्ध है. निटर भोपाल द्वारा सेल्फ लर्निंग मोड में कई कोर्सेस का निर्माण किया गया है जो स्वयं पोर्टल पर काफी लोकप्रिय एवं टीचर्स के लिए उपयोगी रहे हैं. निटर भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने बताया कि धर्म, दर्शन, विज्ञान, वास्तु, ज्योतिष, खगोल, स्थापत्य कला, नृत्य कला, संगीत कला, आदि सभी तरह के ज्ञान का जन्म भारत में हुआ है. इसके हजारों प्रमाण मौजूद हैं. भारत को हमेशा से ही वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र की मान्यता प्राप्त रही है, जिसमें ज्ञान प्रणालियों और बौद्धिक उपलब्धियों का एक लंबा इतिहास है. इस तरह के प्रोग्राम से आज की युवा पीढ़ी एवं टीचर्स भी हमारी समृद्ध भारतीय वैज्ञानिक परम्परा को पहचान कर उस पर गर्व कर सकेंगे. राष्ट्रीय शिक्षा नीति एनईपी 2020 में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के सभी स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये. इस कोर्स की कोर्डिनेटर डॉ रोली प्रधान और को- कोर्डिनेटर प्रो आर के दीक्षित हैं. निटर भोपाल द्वारा अभी तक लगभग 18 मूक्स कोर्सेस का निर्माण किया गया है, जिसके माध्यम से लगभग 2 लाख टीचर्स ने लाभ प्राप्त किया है. सभी कोर्सेस में 31 अगस्त तक स्वयं पोर्टल पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया जा सकता है.

निटर में वॉलीबॉल, बास्केटबॉल ग्राउंड का उद्घाटन

भोपाल. एनआईटीटीआर भोपाल में स्वतंत्रता दिवस पर निदेशक डॉ सी सी त्रिपाठी ने ध्वजारोहण किया . इस दौरान वॉलीबॉल एवं बास्केटबॉल ग्राउंड का उद्घाटन भी किया गया . इस अवसर पर निदेशक डॉ . त्रिपाठी ने कहा कि आइए हम मिलकर ऐसा भारत बनाएं जो न केवल हमारे पूर्वजों के सपनों का सम्मान करता है, बल्कि विश्व के लिए एक मिसाल भी कायम करता है .यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने संविधान के मूल्यों को बनाए रखें, एक अधिक एकजुट और प्रगतिशील राष्ट्र की दिशा में काम करें, और समाज के विकास और कल्याण में अपना योगदान दें .

विकसित भारत बनाने हेतु हम सभी संकल्प एवं समर्पण के साथ कार्य करें-प्रो सी सी त्रिपाठी

भोपाल।
एनआईटीटीआर भोपाल में स्वतंत्रता दिवस पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण के साथ निदेशक डॉ सी सी त्रिपाठी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधन में कहा कि आइए हम मिलकर ऐसा भारत बनाएँ जो न केवल हमारे पूर्वजों के सपनों का सम्मान करता है, बल्कि विश्व के लिए एक मिसाल भी कायम करता है।

यह स्वतंत्रता दिवस और भी विशेष इसलिए है कि अब हमारा देश एक नया सपना देख रहा है – विकसित भारत बनने का। यह सपना केवल सरकारी योजनाओं का नहीं है, बल्कि यह हर भारतीय के दिल की धड़कन है। विकसित भारत का मतलब है एक ऐसे भारत का निर्माण जहाँ हर नागरिक को अपनी क्षमता के अनुसार अवसर मिले, जहाँ बुनियादी सुविधाओं की कोई कमी न हो, और जहाँ हर क्षेत्र में प्रगति हो। यह हमारा कर्तव्य है कि हम एक अधिक एकजुट और प्रगतिशील राष्ट्र की दिशा में काम करें, और समाज के विकास और कल्याण में अपना योगदान दें। इस अवसर पर वॉलीबॉल एवं बास्केटबॉल ग्राउंड का उदघाटन भी किया गया। संस्थान परिवार के बच्चों ने देशभक्ति गीतों एवं नृत्य की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर श्रीमती वंदना त्रिपाठी भी उपस्थित थी।

एनआईटीटीआर ने जनरल एयरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड बेंगलुरू के साथ किया एमओयू

भोपाल। ड्रोन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में मिलकर करेंगे कार्यएनआईटीटीआर भोपाल ने जनरल एयरोनॉटिक्स प्राइवेट लिमिटेड बेंगलुरू के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किये। जनरल एयरोनॉटिक्स विभिन्न क्षेत्रों के लिए ड्रोन टेक्नोलॉजी प्रदान करती है साथ ही कृषि ड्रोन का वाणिज्यिक उत्पादन करती है। इस अवसर पर निटर निदेशक प्रो सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि आज प्रौद्योगिकी दुनिया को बहुत तेजी से बदल रही है। आज ड्रोन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अपार सम्भावनाये हैं। इस क्षेत्र में स्किल्ड मैनपावर की जरुरत है। इस क्षेत्र में युवाओं के लिए लाखों नए रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं यह संख्या आगे और बढ़ेगी। निटर भोपाल ड्रोन टेक्नोलॉजी उसके अनुप्रयोग, संचालन एवं मेंटेनेस के विषय में जागरूकता बढ़ाना तथा इस क्षेत्र में टैलेंट पल तैयार करने हेत जनरल एयरोनॉटिक्स के साथ मिलकर ट्रेनिंग प्रोग्राम भी आयोजित करेगा। जनरल एयरोनॉटिक्स के सीईओ श्री अभिषेक बर्मन ने कहा कि इस समझौते से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भारत को ड्रोन हब बनाने के लक्ष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य होगा। इस एमओयू के माध्यम से स्टूडेंट एवं फैकल्टी को ट्रेनिंग, रिसर्च, ऑनलाइन कोर्सेस आदि का लाभ मिलेगा। इस अवसर पर जनरल एयरोनॉटिक्स के कन्नन एम एवं निटर भोपाल के डीन प्रो सुब्रत रॉय, प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. रमेश गुप्ता उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर विशेष

चाँद से सूरज तक भारत की अंतरिक्ष विजय

डॉ.पी.के पुरोहित

23 अगस्त 2024 को देश अपना पहला राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाएगा जिसका विषय होगा चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना- भारत की अंतरिक्ष गाथा. एक वर्ष पूर्व 23 अगस्त 2023 शाम लगभग 6 बजे पूरी दुनिया के वैज्ञानिक समुदाय के साथ हर भारतीय की सांसें अटकी हुई थी, यह वह पल था जब हम सभी अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की लम्बी छलाँग के साक्षी बने थे. जब चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर भारतीय समय अनुसार सायं 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका था. भारत उस दिन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने वाला पहला देश बन गया है और रूस, अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर लैंडिंग करने वाला चौथा देश बना चुका है. भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नया इतिहास लिख चुका है. चंद्रयान-3 भारत का महत्वाकांक्षी और पूर्ण सफल चंद्र मिशन है. इस ऐतिहासिक उपलब्धि का सम्मान करने के लिए, 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में घोषित किया. निसंदेह अंतरिक्ष दिवस भारत में साइंस एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अध्ययन कर रहे स्टूडेंट्स, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को अंतरिक्ष के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा, और यही इस दिवस की सार्थकता भी होगी.

चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई, 2023 शुक्रवार को भारतीय समय अनुसार दोपहर 2:35 बजे हुआ था. अंतरिक्ष यान ने 5 अगस्त 2023 को चंद्र कक्षा में सफल प्रवेश किया. इसमें एक लैंडर और एक रोवर है, लेकिन इसमें ऑर्बिटर नहीं है. हम सभी ने भारत के दूसरे चंद्रयान-2 मिशन जो की अत्यधिक जटिल मिशन था की आंशिक सफलता को देखा था. विज्ञान में कोई भी प्रयोग कभी असफल नहीं होता.

20 अगस्त 2019 को चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक चंद्र कक्षा में स्थापित किया गया. 100 किमी चंद्र ध्रुवीय कक्षा में चंद्रमा की परिक्रमा करते हुए 02 सितंबर 2019 को विक्रम लैंडर को लैंडिंग की तैयारी में ऑर्बिटर से अलग कर दिया गया था. बाद में, विक्रम लैंडर सतह से 2.1 किमी की दूरी पर अपने पथ से भटक गया और अंतरिक्ष यान के ग्राउन्ड कंट्रोल ने संचार खो दिया. हम सिर्फ चंद दूरी से निराश हो गए, लेकिन यह मिशन नाकाम नहीं रहा, क्योंकि चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर चाँद की कक्षा में अपना काम कर रहा है. इस ऑर्बिटर में कई साइंटिफिक उपकरण हैं जो अच्छे से काम कर रहे है. विक्रम लैन्डर और प्रज्ञान रोवर से जो प्रयोग होना थे वह नहीं हो पाए, देश के वैज्ञानिकों ने हार नहीं मानी और इसरो ने इस अभियान में रह गयी अपनी कमियों को दूर कर नयी ऊर्जा के साथ सफलता अर्जित की. इसके पूर्व चंद्रयान-1 चंद्रमा के लिए भारत का पहला मिशन था. चंद्रयान-1 ऑर्बिटर का मून इम्पैक्ट प्रोब 14 नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर उतरा, जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया. चंद्रयान-1 के ऑर्बिटर ने चंद्रमा पर पानी के संकेतों की खोज की. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के उपकरण ने भी चांद पर पानी होने की पुष्टि की है. उपग्रह ने चंद्रमा के चारों ओर 3400 से अधिक परिक्रमाएं कीं और मिशन तब समाप्त हुआ जब 29 अगस्त 2009 को अंतरिक्ष यान के साथ संचार खत्म हो गया और रविवार 30 अगस्त 2009 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने चंद्रयान प्रथम औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया. अंतरिक्ष के रहस्य व रोमांच किसी भी व्यक्ति को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं. इसरो की सफल वैज्ञानिक यात्रा को कागज पर कलमबद्ध करना समुद्र किनारे की रेत को मुट्ठी में पकड़ने की कोशिश की तरह है. यह यात्रा हर भारतीय को गौरवान्वित करने वाली है.

भारत के भविष्य के विकास में उपग्रहों की महत्वपूर्ण भूमिका को महसूस करते हुए, डॉ. होमी भाभा ने 16 फरवरी, 1962 को भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति का गठन किया और डॉ. विक्रम साराभाई को इसका पहला अध्यक्ष नियुक्त किया. यह समिति 15 अगस्त, 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के रूप में एक बड़ा संगठन बनी. भारत सरकार ने जून 1972 में अंतरिक्ष आयोग और अंतरिक्ष विभाग का गठन किया और इसरो को सितंबर 1972 में अंतरिक्ष विभाग के अधीन कर दिया गया. . इसके बाद प्रारम्भ हुआ इसरो का एक अनवरत सफर. भारत की अंतरिक्ष यात्रा में जहाँ पहला रॉकेट साइकिल पर गया था वही आज चंद्रयान-3 ने चांद पर पांव जमाए, और सूरज के अध्ययन करने वाले सोलर प्रोब, सोलर मिशन आदित्य-एल1 ने इतिहास रच दिया.

वर्ष भर तिरंगे के रंग में रंगा रहता है एनआईटीटीआर

शिवम दुबे रिपोर्ट

भोपाल। एनआईटीटीआर भोपाल में 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज स्थापित हे। संस्थान में लगी हुई लाइट्स भी तिरंगे के रंग की हैं। यह संस्थान वर्ष भर दिन एवं रात में तिरंगे के रंगों में रंगा रहता है।

संस्थान के निदेशक प्रो सी सी त्रिपाठी के अनुसार यह संस्थान की एक अद्वितीय और गर्वित पहल है जो देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देती है। यह पहल देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विरासत के प्रति हर भारतीय को गर्व व सम्मान से भर देती है। यह केवल संस्थान की प्रतिष्ठा को ही नहीं बढ़ाती है बल्कि संस्थान के कर्मचारियों में देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देती है। संस्थान के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है कि 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज तथा तिरंगे के रंगों में रंगा कैंपस राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है.

जिसे वे अपने कैमरे में तस्वीरों और विडियो के माध्यम से सहेज कर रखतें हैं । यह कार्य निटर भोपाल के पूर्व अध्यक्ष संचालक मंडल श्री सी पी शर्मा के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से हुआ था। निटर भोपाल के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो पी के पुरोहित के अनुसार संस्थान का यह राष्ट्रीय ध्वज स्मार्ट रोड पर फोटो लेने का प्रमुख स्थल बन गया है। तिरंगा, जिसमें केसरिया, सफेद, और हरे रंग के साथ अशोक चक्र होता है,यह रंग संयोजन हमें याद दिलाता है कि हम एक समृद्ध, विविध और गौरवशाली इतिहास वाले राष्ट्र का हिस्सा हैं। हमारा यह प्रयास इस बात का प्रतीक है कि संस्थान न केवल अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों को निभा रहा है, बल्कि राष्ट्रीय भावनाओं और मूल्यों को भी जीवित रख रहा है।

विज्ञान समाज और संस्कृति का हिस्सा : डॉ . रंजना

एनआईटीटीटीआर भोपाल में व्याख्यान का आयोजन

भोपाल, 7 सितंबर. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) में साइंस सोसायटी एंड कल्चर: होलिस्टिक एप्रोच फॉर विकसित भारत पर विशेष व्याख्यान का आयोजन हुआ.

इसमें मुख्य वक्ता डॉ. रंजना अग्रवाल निदेशक सीएसआईआर-निस्पर ने कहा कि अनादि काल से भारत में विज्ञान की परंपरा विद्यमान रही है. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से मिले साक्ष्य इस बात का प्रमाण हैं कि उन लोगों में विज्ञान की समझ थी. प्राचीन काल में भारत में विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में महर्षि सुश्रुत के द्वारा खोजी गई शल्य चिकित्सा है, दुनिया आज उन्हें 'फादर ऑफ सर्जरी' मानती है. नागार्जुन ने रसायन विज्ञान को जन्म दिया. मनुष्य और विज्ञान का विकास एक साथ होता है. विकसित

भारत की कल्पना के लिए विज्ञान, समाज और संस्कृति के प्रति समग्र दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है. विज्ञान हमारे समाज एवं संस्कृति का हिस्सा है. मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से कठिन से कठिन कार्य को सरल बना लिया है. आज देश की तरक्की के पैमाने का निर्धारण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है. जो देश विज्ञान के क्षेत्र में जितना उन्नति करेगा, उसकी अर्थव्यवस्था उतनी ही मजबूत होगी. कार्यक्रम के अंत में निटर निदेशक प्रोफेसर सीसी त्रिपाठी ने डॉ. रंजना का अभिनंदन किया. प्रो. दिनेश अग्रवाल, कुलपति गुरुग्राम विश्वविद्यालय एवं डॉ एसएस पांडा, पूर्व निदेशक निटर चेन्नई एवं संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

स्मार्ट शिक्षा से स्मार्ट उद्योग की मांग को पूरा किया जा सकता है-प्रो सी सी त्रिपाठी

शिवम दुबे रिपोर्ट

भोपाल।

एनआईटीटीटीआर भोपाल में रिसर्च स्कॉलर्स एवं विभिन्न प्रोजेक्ट्स की समीक्षा बैठक में निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि स्मार्ट शिक्षा और स्मार्ट उद्योग दोनों ही भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्मार्ट शिक्षा से तात्पर्य है तकनीक का उपयोग करके शिक्षा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाना, जबकि स्मार्ट उद्योग से तात्पर्य है तकनीक का उपयोग करके उद्योगों को अधिक कुशल और उत्पादक बनाना। इस अवसर पर रिसर्च स्कॉलर्स की प्रोग्रेस रिपोर्ट पर विस्तृत चर्चा करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि इनोवेशन के साथ-साथ समाज के लिए उपयोगी रिसर्च पर फोकस करें। रिसर्च स्कॉलर्स नई प्रोसेस एवं प्रोडक्ट इनोवेशन से रिलेटेड रिसर्च कार्य करें। उल्लेखनीय है कि निटर के निदेशक रिसर्च स्कॉलर्स व विद्यार्थियों के साथ नवाचार एवं रिसर्च प्रोसेस पर निरंतर चर्चा करते रहते है। इस अवसर पर रिसर्च के अन्य क्षेत्रों जैसे स्मार्ट एजुकेशन, स्मार्ट इंडस्ट्री रेडीनेस इंडेक्स, मल्टी डिसीप्लनेरी रिसर्च, स्मार्ट मटेरियल डिजाइन, स्पेस टेक्नोलॉजी में एप्लीकेशन बेस्ड रिसर्च, लो कार्बन एमिशन, वैकल्पिक ऊर्जा, एग्रीकल्चर प्रोडक्शन, ड्रोन टेक्नोलॉजी, बेहतर जीवन स्तर, स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण, कुशल और प्रभावी सेवाएं, नवाचार और रोजगार के अवसर, सामाजिक और आर्थिक विकास, स्मार्ट सोसाइटी, जैसे क्षेत्रों की रिसर्च प्रॉब्लम पर चर्चा की गई। इस अवसर पर निटर के डीन, प्रो आशीष देशपांडे, प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो पराग दुबे, प्रो दीपक सिंह सहित फैकल्टी मेंबर्स, रिसर्च स्कॉलर्स एवं स्टाफ मेंबर्स उपस्थित थे।

एनआईटीटीटीआर भोपाल में सृष्टि के शिल्पकार की जयंती पर कार्यक्रम

नित्य नमन टाइम्स | भोपाल

एनआईटीटीटीआर भोपाल में सृष्टि के शिल्पकार की जयंती विश्वकर्मा पूजा के रूप में मनाई गयी। भगवान विश्वकर्मा को विश्व के निर्माता और सभी कलाओं के स्वामी के रूप में जाता है। भारतीय संस्कृति में भगवान विश्वकर्मा को सृजन का देवता माना गया है।

भगवान विश्वकर्मा ही दुनिया के पहले शिल्पकार, वास्तुकार और इंजीनियर थे। धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान विश्वकर्मा ने महलों हथियारों और सिंहासनों का निर्माण किया था। निटर में इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो सी सी त्रिपाठी, श्रीमती वंदना त्रिपाठी, प्रो आर के दीक्षित, प्रो सुब्रत रॉय सहित फैकल्टी मेंबर्स एवं स्टाफ मेंबर्स ने भी पूजा अर्चना की।

निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने की छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुलाकात

एनआईटीटीटीआर भोपाल छत्तीसगढ़ में ड्रोन एवं सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में करेगा कार्य

स्वदेश संवाददाता, भोपाल

एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुलाकात की। इस भेंट में निटर भोपाल के विस्तार केंद्र रायपुर, में इमर्जिंग एवं फ्यूचर टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में अनुसंधान, नवाचार और कौशल पार्क की स्थापना पर विस्तृत चर्चा की गयी। निटर भोपाल ने विस्तार केंद्र रायपुर में ड्रोन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अल्पकालिक पाठ्यक्रम, प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव दिया जो कि क्रेडिट बेस्ड रहेंगे।जिसकी मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने रूचि लेते हुए निटर की प्रशंसा की। विस्ता केंद्र उद्योग की मांगों और नियामक मानकों को पूरा करते हुए कुशल ड्रोन पायलटों और तकनीशियनों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करेगा। यह प्रस्ताव भारत सरकार की ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने और 2030 तक भारत को ड्रोन के लिए प्रमुख वैश्विक केंद्र बनाने की पहल के अनुरूप है। एनआईटीटीटीआर भोपाल ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), व भिलाई प्रौद्योगिकी संस्थान, (बीआईटी) रायपुर के साथ सेमी-कंडक्टर तथा ड्रोन तकनीक में अनुसंधान, नवाचार और कौशल केंद्र के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित किये।

NITTTR Bhopal participates in Hindi Diwas celebration

Bhopal: Director, NITTTR Bhopal and Chairman, Town Official Language Implementation Committee Prof. C.C Tripathi, participated in Hindi Diwas Celebration 2024 and 4th All India Official Language Conference organized by the Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, Government of India, on 14th September 2024 at Bharat Mandapam, New Delhi. 14th September 2024 is special for the Diamond Jubilee of Official Language "Hindi". The inaugural session of this program was presided over by Hon'ble Union Minister of Home Affairs and Cooperation, Shri Amit Shah. He said, "Hindi is not just a language, but an integral part of our culture and identity. Today is the day to take a pledge to make Hindi a universal language. Hindi and all Indian languages complement each other. Making Hindi the official language has promoted unity and cultural heritage in India."

In this conference, officers and employees working in the official language Hindi from different parts of the country participate. Various sessions were organized in

this conference, in which various topics related to Hindi language, current status of Hindi language, challenges in use, new methods for development; Hindi language education and training etc. are discussed. The participation of NITTTR Bhopal in this event not only increased the recognition of Hindi language but also highlighted the social responsibility of the institute and its dedication towards the language. In this event, along with Director Prof. C.C. Tripathi, Prof. P.K. Purohit, Dean, Science Department and Official Language Coordinator of NITTTR Bhopal, Jitendra Chaturvedi and Babli Chaturvedi, Hindi Translator also participated.

हिंदी हमारी पहचान का अभिन्न हिस्सा : प्रो . त्रिपाठी

निटर में हिंदी पखवाड़ा का समापन, विज्ञान शिक्षा विभाग को मिली शील्ड

भोपाल, 30 सितंबर. निटर भोपाल में हिंदी पखवाड़ा का समापन हुआ. इस अवसर पर, निटर भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है. मुख्य अतिथि हिंदी लेखिका वंदना त्रिपाठी थीं.

उन्होंने कविता पाठ कर अपना संबोधन दिया. संस्थान के अधिष्ठाता प्रशासन प्रो. आर.के दीक्षित ने कहा, हमें अपनी भाषा को गर्व के साथ अपनाना चाहिए और इसे समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए. समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कविता पाठ, निबंध लेखन, प्रश्न मंच और भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया. राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग को चलशील्ड प्रदान की गई जिसे डीन प्रो. पी.के पुरोहित एवं अन्य संकाय सदस्य व कर्मचारियों ने ग्रहण किया.

स्वदेशी तकनीक से आत्मनिर्भर बन रहा भारत

भोपाल, 20 सितंबर. निटर भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय उद्यमिता एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (आईक्रिएट) अहमदाबाद के अधिकारियों अविनाश पुणेकर, सीईओ एवं आशीष कनोजिया, प्रौद्योगिकी सलाहकार, ने संस्थान का भ्रमण कर संस्थान निदेशक व संकाय सदस्यों के साथ बैठक की.

बैठक में कौशल एवं उद्यमिता केंद्र की स्थापना, उद्यम निर्माण या इनक्यूबेशन प्रबंधन तथा भविष्य में संयुक्त कार्यक्रम करने पर चर्चा की. निटर निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा स्टार्टअप के प्रति धारणा बदलने की जरूरत है. स्टार्टअप को अक्सर जोखिम भरा और अस्थिर माना जाता है, लेकिन यह स्टार्टअप्स ही नवाचार, रोजगार और आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं. कम लागत की स्वदेशी तकनीकों से स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन और निर्माण के लिए भारत को वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करते हुए, सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले निर्माण में व्यापक रूप से कार्य किया जा रहा है.

(75वीं वर्षगांठ) पर विशेष

भारत की एकता को बढ़ाती है हिंदी

बबली चतुर्वेदी
हिंदी अनुवादक
एनआईटीटीटीआर भोपाल

भारत की स्वतंत्रता के बाद, राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने के लिए एक लंबी चर्चा हुई. अंततः संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया. राजभाषा किसी देश या प्रदेश के विभिन्न राजकाज या सरकारी कार्यों को चलाने के लिए प्रयुक्त विधि द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा होती है. इस वर्ष 14 सितम्बर 2024 को भारत की राजभाषा हिंदी की हीरक जयंती (75वीं वर्षगांठ) मनाई जा रही है. यह दिन भारतीय भाषाओं की विविधता में हिंदी की भूमिका और महत्व को मान्यता देने का विशेष अवसर है. हिंदी, भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषाओं में से एक है और यह भारत की राजभाषा भी है.

इसकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई है और यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है. हिंदी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत भारत की एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है. राजभाषा के रूप में 'हिंदी' का महत्व भारतीय समाज और संविधानिक व्यवस्था में बहुत अधिक है. यह अवसर हिंदी भाषा के इतिहास, विकास और वर्तमान स्थिति पर विचार करने का एक उपयुक्त समय है. इस अवसर पर विभिन्न केंद्रीय एवं राजकीय संस्थानों में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न समारोह, कार्यक्रम, और विचार-विमर्श आयोजित किए जाते हैं, जो हिंदी की समृद्धि और उसके समाज पर प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते हैं.

हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की एक अहम कड़ी है, जो सांस्कृतिक विविधताओं को भी एक साथ लाती है. हिंदी ने समय के साथ कई अन्य भाषाओं और संस्कृतियों से शब्दों और विचारों को आत्मसात किया है. इसकी इस भाषाई समृद्धि ने इसे एक बहुपरकारी और समावेशी भाषा बना दिया है. हिंदी के विकास की यह यात्रा न केवल भाषा की समृद्धि को दर्शाती है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता और एकता का भी प्रतीक है. हिंदी ने भारतीय साहित्य, शिक्षा और मीडिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. हिंदी में लिखे गए ग्रंथों, कविताओं, और उपन्यासों ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया है.

हिंदी शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और ज्ञान को प्रसार के लिए एक सशक्त माध्यम रही है. हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान भारतीय आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में भी देखा जा सकता है. भारत एक ऐसा देश है जहां विविधता का सम्मिलन होता है और हिंदी उसकी एकता का स्तम्भ है. यह न केवल देश की विभिन्न भागों में संवाद और समन्वय को बढ़ावा देती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की पहचान को मजबूत करती है. हिंदी भाषा अब क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भ से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में पहचान बनाती जा रही है. यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता प्राप्त है.

14 सितम्बर 2024, राजभाषा के रूप में हिंदी की हीरक जयंती अर्थात 75 वर्षों की यात्रा का सम्मान और उत्सव है. यह दिन हिंदी की समृद्धि, विकास, और इसके योगदान का सम्मान करने का अवसर है. हिंदी, भारत की राजभाषा, न केवल एक भाषा है बल्कि एक ऐसी सांस्कृतिक धरोहर है जो भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को समेटे हुए है. राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है, तथा हमें हिंदी के भविष्य की दिशा पर भी विचार करना चाहिए, और इसे एक प्रगतिशील और समावेशी भाषा के रूप में और अधिक सशक्त बनाने का संकल्प लेना चाहिए.

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग को चलशील्ड

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान: प्रो. सी.सी त्रिपाठी

स्वदेश संवाददाता, भोपाल

निटर भोपाल में सोमवार को हिंदी पखवाड़ा का समापन हुआ। इस अवसर पर, निटर भोपाल के निदेशक प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में "हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और पहचान का अभिन्न हिस्सा है।" समापन समारोह की मुख्य अतिथि हिंदी लेखिका श्रीमती वंदना त्रिपाठी थीं। उन्होंने कविता पाठ कर अपना संबोधन दिया। संस्थान के अधिष्ठाता प्रशासन प्रो. आर.के दीक्षित ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में युवाओं की भूमिका पर जोर दिया और कहा, "हमें अपनी भाषा को गर्व के साथ अपनाना चाहिए और इसे समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए।" समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कविता पाठ, निबंध लेखन, प्रश्न मंच और भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग को चलशील्ड प्रदान की गई जिसे डीन प्रो. पी.के पुरोहित एवं अन्य संकाय सदस्य व कर्मचारियों ने ग्रहण किया। सभी प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिससे समारोह में एक उत्साहपूर्ण माहौल बना। अंत में, सभी उपस्थित लोगों ने एकजुट होकर हिंदी भाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की और अगले वर्ष फिर से इस तरह के आयोजन के लिए, उत्साहपूर्वक तत्पर रहने का संकल्प लिया।

निटर में हिंदी पखवाड़ा पर कार्यशाला आयोजित

भोपाल, 19 सितंबर. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (निटर) भोपाल में 30 सितंबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है. इसके तहत हिंदी सीखने और बोलने के प्रति लोगों में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यशाला प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं.

इस अवसर पर एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. सी.सी त्रिपाठी ने अपने सन्देश में कहा कि हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, पहचान और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है. आइए, हम सब मिलकर हिंदी को अपनी संस्कृति और ज्ञान का प्रतीक बनाएं और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करें. हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ पर विज्ञान के अनुप्रयोग पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके समन्वयक डॉ.पी.के पुरोहित थे. उन्होंने कहा, हिंदी में विज्ञान की शिक्षा केवल भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच को विकसित करने के लिए भी आवश्यक है.

दिव्यांगजनों के कौशल विकास एवं सशक्तीकरण मानवता की सच्ची सेवा है: प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

नित्य नमन टाइम्स | भोपाल

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान, सीहोर एवं सीआरसी भोपाल की टीम ने एनआईटीटीटीआर भोपाल का भ्रमण किया। इस टीम ने एनआईटीटीटीआर भोपाल के साथ मिलकर संयुक्त कार्यक्रमों पर चर्चा की। इन संस्थान एवं केंद्रों पर मानसिक रूप से अशक्त लोगों का सशक्तीकरण एवं सभी श्रेणियों के दिव्यांग व्यक्तियों के लिए व्यापक दिव्यांग पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने का कार्य किया जाता है। निटर निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा की मानसिक स्वास्थ्य हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। समाज के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते दिव्यांगजनों के कौशल विकास, पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण के लिए किया गया हर कार्य मानवता की सच्ची सेवा है। हम इस सेवा में भागीदार बनने इस दिशा में हर संभव सहयोग के लिए तैयार हे। इस अवसर पर निटर भोपाल से प्रो अजय जैन ,प्रो पी के पुरोहित ,प्रो आशीष देशपांडे सीआरसी भोपाल से डॉ नरेंद्र कुमार,एनआईएमएचआर सीहोर से डॉ अंकित चौधरी उपस्थित थे।